राष्ट्रीय छात्रशक्ति

शिक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका

वर्ष : 29 अंक : 6 नवम्बर–दिसम्बर, 2006

13 दिसंबर को संसद पर हमले के दौरान हुए शहीद

ओम प्रकाश डबास

विजेन्दर सिंह

देशराज सिंह

मातबर सिंह नेगी

कमलेश कुमारी

नानक चंद

घनश्याम

रामपाल सिंह

जगदीश प्रसाद यादव

जरा याद करो कुर्बानी

गाजियाबाद में आयोजित पश्चिमी उत्तर प्रदेश के प्रांत अधिवेशन का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए सी.बी.आई. के पूर्व महानिदेशक सरदार जोगेन्द्र सिंह

पश्चिमी उत्तर प्रदेश के प्रांत अधिवेशन में उपस्थित प्रतिनिधि

दिल्ली प्रदेश के प्रांत अधिवेशन का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए विद्यार्थी परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. कैलाश शर्मा

दिल्ली प्रदेश के प्रांत अधिवेशन में उपस्थित परिषद् के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री श्री अतुल कोठारी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह प्रांत प्रचारक श्री कृष्ण लाल बावेजा तथा अन्य प्रतिनिधि

राष्ट्रीय
छात्रशक्ति
शिक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका
वर्ष : 29 अंक : 6, नवम्बर–दिसम्बर, 2006

संरक्षक
अतुल कोठारी
संपादक
डा. मुकेश अग्रवाल
प्रबंध संपादक
नितिन शर्मा
संपादक मंडल
संजीव कुमार सिन्हा
आशीष कुमार 'अंशु'
उमाशंकर मिश्र

डा. रंजीत ठाकुर द्वारा अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, बी–50, क्रिश्चियन कॉलोनी, पटेल चेस्ट, दिल्ली–110007 के लिए प्रकाशित एवं पुष्पक प्रेस, 119, डीएसआईडीसी कॉम्प्लेक्स, ओखला, फेज–1, नई दिल्ली–20 द्वारा मुद्रित

फोन : 011 – 27666019, 27662477
E-mail : chhatrashakti@yahoo.co.in
Website : www.abvp.org

मूल्य : एक प्रति रुपए 10/–

शुभकामना

"राष्ट्रीय छात्रशक्ति" की ओर से सभी पाठकों एवं देशवासियों को लोहड़ी, पोंगल तथा युवा दिवस पर हार्दिक शुभकामनाएं।

विषय सूची

राष्ट्रीय परिदृश्य
फिर दागदार हुआ संप्रग का दामन 6
श्रद्धांजलि
भारतीय संस्कृति के वाहक धर्मपाल 8
सच रो दूर सच्चर समिति 9
13 दिसम्बर पर विशेष
जरा याद करो कुर्बानी 11
परिचर्चा
आतंकवाद को रोकने के लिए सरकार क्या करे 12
निर्वाण दिवस पर विशेष
सामाजिक समरसता के अग्रदूत 14
संघर्ष की राह पर 17
परिषद गतिविधियां 20
साक्षात्कार
विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय
महामंत्री श्री के.एन. रघुनंदन 27
सिंगुर में उतरा वामपंथियों का जनवादी नकाब 29

साथ में– कविता / स्मरणांजलि / Martyrdom of Karyakartas

आह्वान

- *क्या आप देश की वर्तमान दशा पर चिन्तित हैं?*
- *क्या आपको दृढ़ विश्वास है कि सामाजिक परिवर्तन लाने में छात्र-युवा ही सक्षम हैं?*

यदि हां

- *तो अपने क्षोभ को शब्द दीजिए और विश्वास कीजिए, आपमें क्षमता है कलम की नोंक से दुनिया का रुख बदलने की।*
- *अपने विचारों को साहित्य की किसी भी विधा में शब्द दें तथा राष्ट्रीय छात्रशक्ति द्वारा अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, बी-50, क्रिश्चियन कॉलोनी, पटेल चेस्ट, दिल्ली-110007 को प्रेषित करें।*

कदम मिलाकर चलना होगा

– अटल बिहारी वाजपेयी

बाधाएं आती हैं आएं,
घिरे प्रलय की घोर घटाएं,
पांवों के नीचे अंगारे,
सिर पर बरसे यदि ज्वालाएं,
निज हाथों से हंसते–हंसते,
आग लगा कर जलना होगा।
कदम मिलाकर चलना होगा।

हास्य–रूदन में, तूफानों में,
अमर असंख्यक बलिदानों में,
उद्यानों में, वीरानों में
अपमानों में, सम्मानों में,
उन्नत मस्तक, उभरा सीना,
पीड़ाओं में पलना होगा।
कदम मिलाकर चलना होगा।

उजियारे में अंधकार में,
कल कछार में, बीच धार में,
घोर घृणा में, पूत प्यार में,
क्षणिक जीत में, दीर्घ हार में,
जीवन के शत–शत आकर्षक,
अरमानों को दलना होगा।
कदम मिलाकर चलना होगा।

सम्मुख फैला अमर ध्येय पथ,
प्रति चिरंतन कैसा इति अथ,
सुस्मित हर्षित कैसा श्रम श्लथ,
असफल, सफल समान मनोरथ,
सब कुछ देकर कुछ न मांगते,
पावस बनकर ढलना होगा।
कदम मिलाकर चलना होगा।

कुश कांटों से सज्जित जीवन,
प्रखर प्यार से वंचित यौवन,
नीरवता से मुखरित मधुवन,
पर–हित अर्पित अपना तन–मन,
जीवन को शत्–शत् आहुति में,
जलना होगा, गलना होगा।
कदम मिलाकर चलना होगा।
■

स्मरणांजलि

स्व० यशवंतराव केलकरजी ने अपना पूरा जीवन समाज परिवर्तन के महती कार्य में खपा दिया। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के शिल्पकार एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सजग स्वयंसेवक के रूप में वे निरंतर एक मजबूत संगठन बनाने एवं लोकसंग्रह के कार्य में जुटे रहे। उनके स्नेहिल सान्निध्य से अनेक कार्यकर्ताओं का जीवन मिशन के रूप में परिणत हुआ। उनके जीवन का हर क्षण कार्यकर्ताओं को प्रेरणा देता था। विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे श्री केलकरजी की पुण्य स्मृति में कार्यकर्ताओं ने अपने अनुभवों को 'पूर्णांक की ओर' नामक पुस्तक में शब्दांकित किया है। प्रस्तुत है इस पुस्तक से उद्धृत प्रेरणास्पद अनुभव :–

स्व० यशवंतराव केलकर

आपातकाल के दिन थे। संघ परिवार के कार्यकर्ताओं की धड़पकड़ शुरू हो गई थी। यशवन्तरावजी को भी गिरफ्तार किया गया। पुलिस के साथ घर से निकलते समय उन्होंने काफी मात्रा में किताबें पढ़ने के लिए साथ ले ली थी। जेल में कदम रखते ही कुछ दिनों में ही कई उपक्रम शुरू हो गए। शिविर, चर्चा सत्र आदि और यशवन्तरावजी ने उन उपक्रमों की योजना तथा कार्यवाही में अपने को पूरी तरह से उलझा लिया। थोड़े दिनों के बाद उन्होंने साथ रखी हुई किताबें लौटा दी और कहा, "लोगों में रहते समय इसकी आवश्यकता नहीं है।"

मनुष्य सबसे महत्वपूर्ण है यही शायद उन्हें कहना होगा। ■

सरकार समय रहते चेते

देश विषम परिस्थितियों से गुजर रहा है। जिस किश्ती का सहारा लेते हैं, वही डूबती नजर आती है। राजनीति के अपराधीकरण की प्रकिया पूरी हो गई लगती है। डाकू राजनीतिज्ञ बन रहे हैं तो राजनीतिज्ञ वंशवाद की बेल लंबी करते नजर आ रहे है। हत्यारे मंत्री और सांसद हैं। विडम्बना यह है कि यदि उन्हें दर्पण दिखाया जाय तो वे दर्पण दिखाने वाले को ही दर्पण दिखाने लगते हैं। 'मैं चोर हूं तो तू भी तो चोर है 'नारा बुलंद कर स्वयं को पाक–साफ मान लिया जाता है। कोई यह नहीं कहता कि तुम भले ही चोर हो, पर मैं नैतिकता का मानक स्थापित करूँगा। मैं लाल बहादुर शास्त्री को उदाहरण मानकर तुरंत पदत्याग कर दूंगा। पर नहीं, कीचड़ से कीचड धोया जा रहा है। सारे देश को कीचड़ में सानने का षड़यंत्र जैसा चल रहा है। परंतु हम भारतीय तो आस्थावादी हैं। इस कीचड़ में ही कमल खिलेगा, इसका हमें पूर्ण विश्वास है।

संप्रग सरकार का प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को बनाया गया तो देश ने राहत की साँस ली थी। विश्वविख्यात वैज्ञानिक के साथ विश्वविख्यात अर्थशास्त्री देश के सर्वोच्च पद पर बैठा। परंतु जहाँ वैज्ञानिक ने देश को नई दृष्टि देने का प्रयास किया, वहीं अर्थशास्त्री सत्ता का पूर्ण नियंत्रण हाथ में न रख सके। विकास दर बढ़ने का दावा किया गया, परंतु महंगाई कम नहीं हुई। देश में बेरोजगारी, बिजली और पानी की कमी जैसी समस्याएँ यथावत बनी हुई हैं। परंतु इसे भी अधिक चिंता का विषय है, देश के विकास के प्रति सम्यक चिंतन का नितांत अभाव। तदर्थ रीति से देश को चलाया जा रहा है। स्वयं प्रधानमंत्री कभी निष्क्रिय दिखाई देते हैं और कभी आपत्तिजनक बयान दे देते हैं। मुस्लिमों के विकास की बात की जाती है, परंतु उनका विकास कहीं नजर नहीं आता। अन्य दलितों और पिछड़े वर्गों के विकास की बात होती है परंतु क्रीमीलेयर जैसे विषय पर चिंतन और विचार–विमर्श नहीं होता। एक राजनीतिक दल पर साम्प्रदायिक होने का आरोप लगाया जाता है परंतु स्वयं प्रधानमंत्री तथा सरकार कभी मुस्लिम आरक्षण और कभी सच्चर कमेटी के नाम पर वोटों की राजनीति पर देश को सांप्रदायिकता के दलदल में डुबो रहे हैं। अभी पिछलों दिनों तो देश के संसाधानों पर पहला अधिकार मुस्लिमों का बताया गया और यह बयान प्रधानमंत्री का ही था। प्रधानमंत्री का विवादास्पद बयान पूरा पढ़ें तो उससे भी यही ध्वनि निकलती है। प्रधानमंत्री को एक धर्म विशेष के लोगों की चिंता है, देश के सभी गरीबों, दलितों, पिछड़ों की नहीं। यह देश को सांप्रदायिकता के गर्त में धकेलना नहीं तो और क्या है? दुर्भाग्य की बात यह कि **सरकार में करेला और नीम चढ़ा स्थिति हो गई है**। कांग्रेस का साथ वामपंथी दे रहे हैं, जिनकी सोच कभी सकारात्मक रही ही नहीं। उन पर अंग्रेजों का साथ देने के आरोपों को छोड़ भी दें तब भी रूस ओर चीन ही उनके आका रहे हैं। इसका नवीनतम प्रमाण उन्होंने अभी प्रस्तुत किया।

चीनी प्रतिनिधि मंडल के भारत की यात्रा पर आने के साथ ही भारत के अभिन्न अंग अरूणाचल प्रदेश को चीनी क्षेत्र सिद्ध करने संबंधी बयान आने लगे। वामपंथियों को भी चीनी प्रतिनिधियों की बात ही सही लगने लगी। स्पष्ट ही है कि वामपंथी वामपंथी पहले हैं, भारतीय बाद में। दुर्भाग्य यह है कि वामपंथियों में जो बुद्धिजीवी हैं या तो उनकी बात सुनी नहीं जाती या फिर वे भी दृष्टि विशेष से सोचने के अभ्यस्त हो गए हैं। परंतु इस प्रकार का राष्ट्रविरोधी और सांप्रदायिक चिंतन देश की सुरक्षा के लिए निश्चय ही खतरा बन सकता है।

एक बात और संसद पर हमले के आरोपी अफजल गुरू को फाँसी की सजा से क्षमा का मामला अभी तक राष्ट्रपति के पास विचाराधीन है। इसका देश की सैन्य–शक्ति पर प्रभाव पड़ सकता है। आतंकवाद के विरूद्ध कारवाई में शरीक होने वाले सैकड़ों शहीदों की विधवाओं और बच्चों के साथ देश का सामान्य जन भी प्रधानमंत्री से यही प्रश्न कर रहा है कि ,आखिर कब तक वे देशवासियों के धैर्य की परीक्षा लेंगे। 1942 और 1975 ई. के युवा और छात्र को सरकार भले ही भूल गई हो परंतु इस देश का युवा आजं भी करवट लेगा तो युग–परिवर्तन कर देगा। सरकार समय रहते चेते इसी में इसका और देश का कल्याण है। ■

फिर दागदार हुआ संप्रग का दामन

– संजीव कुमार सिन्हा

भारतीय राजनीति शर्मसार है। भारत के लोकतांत्रिक इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ है कि एक केन्द्रीय मंत्री को आजीवन जेल की सलाखों के पीछे धकेल दिया गया। पिछले दिनों अदालत ने केंद्रीय कोयला मंत्री शिबू सोरेन को अपने निजी सचिव की हत्या के मामले में दोषी करार दिया। तमाम विसंगतियों से भरी संप्रग सरकार का दामन एक बार फिर दागदार हुआ। जन–प्रतिनिधि जब जन–भक्षक हो जाएं, तो देशवासियों का चिंतित होना स्वाभाविक है। जन–प्रतिनिधि ही जब लोगों के जान की सुपारी लेने लगे तो देश के भविष्य का सहज अंदाजा लगाया जा सकता है। संप्रग सरकार के शासन में प्रजातंत्र अपराध तंत्र में बदल गया है। यह सरकार निर्लज्ज तरीके से दागदार छवि वाले मंत्रियों को शह दे रही है। सुविदित है कि देश में संसदीय लोकतंत्र की परंपरा का निर्वाह होता रहा है कि जिस व्यक्ति पर भ्रष्टाचार और हत्या जैसे मामले में चार्जशीट और मुकदमा चल रहा हो, उसे किसी पद पर आसीन नहीं होना चाहिए लेकिन इस सरकार में सभ्य समाज को अपने बाहुबल से आतंकित करनेवाले व्यक्तियों की भरमार है, जिन्हें इस देश की कानून व्यवस्था का जरा भी भय नहीं है। स्थिति दिनोंदिन बिगड़ रही है। सत्ता सुख भोगने में कांग्रेस–कम्युनिस्ट इस कदर मदहोश है कि गंभीर आपराधिक छवि वाले मंत्री उनके मंत्रिमंडल की शोभा बढ़ा रहे है। आम आदमी के हितों के नारे के साथ सत्ता में आई कांग्रेसनीत संप्रग सरकार आम आदमी के हितों के साथ विश्वासघात कर रही है। इनके एजेंडे में सुशासन हाशिए पर है। पूरी कवायद इतनी भर है कि भले ही देश और समाज को कितना भी नुकसान उठाना पड़े, सत्ता पर कोई आंच न आए।

ताजा मामला शिबू सोरेन का है। गौरतलब है कि 1993 में नरसिंह राव सरकार को बचाने के लिए कांग्रेस पार्टी और झारखंड मुक्ति मोर्चा के अध्यक्ष शिबू सोरेन के बीच समझौते हुए थे। कांग्रेस सरकार को बहुमत में लाने के लिए झामुमो के सांसदों का समर्थन प्राप्त करने हेतु 20 लाख रुपये की रिश्वत दी गई। इसकी जानकारी सोरेन के निजी सचिव शशिनाथ झा को थी। 22 मई, 1994 को शशिनाथ झा का अपहरण दिल्ली के धौलाकुआं इलाके से किया गया। इसका आरोप शिबू सोरेन और उनके नजदीकी साथी नंद किशोर मेहता व पांच अन्य पर लगा। झा को रांची के पास पिस्का नगड़ी गांव में ले जाया गया और वहां उनकी हत्या कर शव गाड़ दिया गया। शशि नाथ झा के बड़े भाई अमर नाथ झा की शिकायत पर संसद मार्ग पुलिस थाने में शिबू सोरेन के खिलाफ शिकायत पर उच्च न्यायालय ने सीबीआई को जांच के आदेश दिए। ■

गत 28 नवंबर 2006 को दिल्ली की एक निचली अदालत ने केंद्रीय कोयला मंत्री शिबू सोरेन को अपने निजी सचिव शशिनाथ झा की हत्या के मामले में दोषी करार दिया और इसके तत्काल बाद श्री सोरेन को न्यायिक हिरासत में ले लिया गया था। अदालत ने श्री सोरेन को आपराधिक साजिश, हत्या और अपहरण के षड्यंत्र में शामिल बताया। सीबीआई की एक विशेष अदालत ने पूर्व केंद्रीय मंत्री शिबू सोरेन को इसी मामले में 5 दिसंबर 2006 को आजीवन कारावास की सजा सुनाई। सीबीआई के विशेष न्यायाधीश बीके केडिया ने झारखंड मुक्ति मोर्चा प्रमुख को यह सजा सुनाते हुए शशिनाथ झा के परिवार को पांच लाख रुपए का मुआवजा देने का भी आदेश दिया। इस मामले में नंद किशोर मेहता उर्फ नंदू, शैलेंद्र भट्टाचार्य, पशुपति नाथ मेहता उर्फ पोशो और अजय कुमार मेहता उर्फ दिलीप को भी दोषी ठहराया गया है। हालांकि अदालत ने सुनील खवारे और आशीष ठाकुर को बरी कर दिया।

गौरतलब है कि सन् 2004 में जामताड़ा की जिला अदालत ने 1975 के चीरूडीह नरसंहार कांड के सिलसिले में शिबू सोरेन को फरार घोषित करते हुए उनके विरूद्ध वारंट जारी किया था। कोयला मंत्री के पद पर रहते हुए भी वह कई दिन तक गायब रहे। शायद देश के इतिहास में पहली बार कोई मंत्री वारंट निकलने के बाद कई दिन तक गायब रहा और न सरकार, न पुलिस को उसकी कोई खबर लगी। झारखंड उच्च न्यायालय से भी उन्हें जमानत नहीं मिली। अंततः उन्हें आत्मसमर्पण करना पड़ा और जेल जाना पड़ा। जेल से छूटने के कुछ समय बाद मनमोहन सिंह सरकार में वह फिर कोयला मंत्री बन गए। वह केस अभी चल रहा है उनके विरूद्ध एक और केस 1974 में परिटांड थाना क्षेत्र के कुडको गांव में दो लोगों की हत्या की आरोप जांच के दौर में है।

सत्ता सुख भोगने में कांग्रेस–कम्युनिस्ट इस कदर मदहोश है कि गंभीर आपराधिक छवि वाले मंत्री उनके मंत्रिमंडल की शोभा बढ़ा रहे है। आम आदमी के हितों के नारे के साथ सत्ता में आई कांग्रेसनीत संप्रग सरकार आम आदमी के हितों के साथ विश्वासघात कर रही है। इनके एजेंडे में सुशासन हाशिए पर है। पूरी कवायद इतनी भर है कि भले ही देश और समाज को कितना भी नुकसान उठाना पड़े, सत्ता पर कोई आंच न आए।

निश्चित रुप से 'राजनीति का अपराधीकरण' आज देश के समक्ष एक गंभीर चुनौती है। राजनीति देश का भविष्य तय करती है लेकिन संप्रग सरकार पूरी तौर पर दिशाहीन नजर आ रही है। यह सरकार दागी सांसदों और मंत्रियों की शरणस्थली बनी हुई है। ऐसा पहली बार नहीं हुआ है कि दागी मंत्रियों का मसला उछला है। इस सरकार का गठन ही दागी नेताओं के बलबूते हुआ। इस सरकार के मंत्रिमंडल में चारा घोटाले के आरोपी लालू प्रसाद, हत्या– धोखाधड़ी जैसे गंभीर मामलों अभियुक्त तस्लीमुद्दीन व एम.ए. फातमी, विदेशी मुद्रा के उल्लंघन में शामिल प्रेमचंद गुप्ता जैसे अनेक मंत्री अभी भी शामिल है। प्रधानमंत्री मंत्रिमंडल बनाते है। यह प्रधानमंत्री का विशेषाधिकार है कि वे किसे मंत्री बनाएं। उन्होंने जिस तरीके से दागदार छवि वाले सांसदों को मंत्री बनाया, इससे वे भी कठघरे में आ जाते है। निःसंदेह प्रधानमंत्री स्वच्छ छवि के है, परंतु उनमें साहस का अभाव है। अपने पीए की हत्या के षड्यंत्र में शिबू सोरेन को न्यायालय ने आजीवन कारावास की सजा सुनाई, लेकिन सोरेन अभी भी संसद सदस्य पद को सुशोभित कर रहे है। यह शर्मनाक है। शिबू सोरेन ने दूसरी बार इस्तीफा दिया है। प्रधानमंत्री के पास कई बार ऐसे अवसर आए जब वे सोरेन को कैबिनेट मंत्री बनने से रोक सकते थे। उन्हें यह अच्छी तरह मालूम था कि सोरेन पर गंभीर मुकदमा चल रहा है लेकिन झामुमो के मात्र पांच सांसद के समर्थन के चलते उन्होंने भारतीय संसद पर कलंक का धब्बा लगने दिया। महज सत्ता की खातिर इस हद तक नीचे गिर जाना खतरनाक है दूसरी ओर सोरेन झारखंड की संप्रग समन्वय समिति के प्रमुख है। इस कारण मुंडा सरकार की सेहत पर भी विपरीत प्रभाव पड़ना लाजिमी है।

भारतीय लोकतंत्र तभी मजबूत होगा जब 'राजनीति के अपराधीकरण' पर रोक लगेगा। आज इस बात की सख्त आवश्यकता है कि प्रधानमंत्री सक्षम नेतृत्व का परिचय दें और मंत्रिमंडल से दागी मंत्रियों को निकाल बाहर करें अन्यथा देश की जनता सही समय संप्रग सरकार को सबक सिखा देगी। ■

भारतीय संस्कृति के वाहक धर्मपाल

– आशीष कुमार 'अंशु'

धर्मपाल के विषय में वैसे तो कम लिखा–पढ़ा गया है। बहुत सारे ऐसे विद्यार्थी होंगे जिनके लिए उनका नाम अपरिचित सा होगा। उन्हें एक इतिहासकार, शिक्षाविद, पत्रकार, लेखक की जगह भारत की सनातन परंपरा के अध्येता के रूप में जानना और समझना ज्यादा आसान होगा। भारत में जितने भी गांधीवादी हैं, सबने गांधी तक पहुंचने के लिए कोई ना कोई मार्ग तलाशा है। यह मार्ग कभी विनोबा बने, तो कभी लोहिया बने। कभी एन के बोस बने तो कभी जे पी एस ओबेराय। धर्म पाल को भी गांधी तक पहुंचने के मार्ग के रूप में कई गांधीवादियों ने देखा। धर्मपाल ने खुद सनातन भारत की परंपराओं और यहां अंग्रेजी राज को समझने के लिए उनके दर्शन और उनकी दृष्टि को माध्यम बनाया था।

1966–86 तक धर्मपाल का अधिकांश समय शोध एवं लेखन में बिता। इस दौरान मूल रूप से उन्होंने भारत की परंपराओं, सभ्यता, संस्कृति को यूरोपीय आंखों से समझने और समझाने का प्रयास किया। यह एक नए तरह का प्रयोग था। इसी कड़ी में 'सिविल डिसओबीडिएन्स इन इंडियन ट्रेडिशन विद सम अर्ली नाईन्टीन्थ सेन्चुरी डाक्यूमेन्ट्स का प्रकाशन हुआ। 1971 में ही इनकी दूसरी पुस्तक 'इंडियन साईंस एन्ड टेक्नोलॉजी इन दी एटीन्थ सेन्चुरी: सम कन्टेम्पररी एकाउन्ट्स' प्रकाशित हुई। 1972 में उनकी तीसरी पुस्तक 'दि मद्रास पंचायत सिस्टम: ए जनरल असेसमेन्ट' आई। अगले कई वर्षो तक उनकी अनेक किताबें आई। जिसमें 'दि ब्यूटिफूल ट्री' की काफी चर्चा हुई।

पत्रकार चिन्तक देवेन्द्र स्वरूप के अनुसार धर्मपाल जी ने पाया कि ब्रिटिश सत्ता की स्थापना से 250 वर्षों का इतिहास भारत की बर्बादी का इतिहास है और भारत को आत्मबोध कराने के लिए ब्रिटिश सत्ता के प्रारंभिक चरणों में विविध क्षेत्रों में भारत की परंपरागत व्यवस्थाओं का भारतीयों को ज्ञान कराना आवश्यक है। और यह स्वयं ब्रिटिश एवं अन्य यूरोपियों के द्वारा भारतीय व्यवस्थाओं के प्रथम साक्षात्कार पर आधारित समकालीन दस्तावेजों को प्रकाशित कर ही संभव है। यही उनके द्वारा प्रकाशित पुस्तकों के पीछे की मूल प्रेरणा और दृष्टि है।' वास्तव में ब्रिटिश कुचक्रों से निपटने के लिए धर्मपाल ब्रिटिश दस्तावेजों के प्रकाशन को महत्वपूर्ण मानते थे। इसके अन्तर्गत 1999 में उनकी पुस्तक 'भारत की लूट और बदनामी: उन्नीसवीं सदी के आरंभ में इंग्लिश धर्मयुद्ध' प्रकाशित हुई। फिर जुलाई 2002 में 'भारत में गोहत्या का ब्रिटिश मूल: 1880–94' प्रकाशित हुई। लेकिन बाद के वर्षो में उनके जीवन में संवाद, चिन्तन, मनन और प्रवचन का क्रम बढता चला गया। इस बीच वे आम आदमी, लोक संस्कृति और सनातन परंपरा को समझने की कोशिश करते रहे। उदयन वाजपेयी उनके लिए कहते हैं ' मैं नहीं समझता कि यूरोपीय मानस को गांधीजी के बाद किसी और ने धर्मपाल से बेहतर समझा है। ऐसे विचारक का चले जाना भारत के बौद्धिक एवं सांस्कृतिक जीवन को गहरी ठेस पहुंचाता है।' मुझे लगता है कि धर्मपाल को समझने के लिए उनकी दो पुस्तक 'भारतीय चित्त,मानस और काल' व भारत का स्वधर्म, इतिहास, वर्तमान और भविष्य का संदर्भ' को पढ़ना चाहिए। लेकिन दुख की बात है कि इन पुस्तकों की सही समीक्षा नहीं हुई। आज हमारे बीच धर्मपाल नहीं हैं लेकिन पुस्तकों के माध्यम से उनका मार्गदर्शन आज भी हमें प्राप्त है। उनकी पुस्तकें 18वीं और 19वीं सदी के भारत को समझने के लिए एक प्रामाणिक दस्तावेज हैं। आज जरूरत है उनके पुस्तकों की पुनः समीक्षा की। ■

धर्मपाल ने खुद सनातन भारत की परंपराओं और यहां अंग्रेजी राज को समझने के लिए उनके दर्शन और उनकी दृष्टि को माध्यम बनाया था।

सच से दूर सच्चर समिति

– ए. सूर्यप्रकाश

देश में मुस्लिम समाज की सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक स्थिति का पता लगाने के लिए प्रधानमंत्री द्वारा गठित राजेन्द्र सच्चर समिति ने अपना कार्य पूरा कर लिया है। 20 माह पहले इस समिति की नियुक्ति ने राजनीतिक क्षेत्रों में खासा विवाद खड़ा कर दिया था, क्योंकि तब इसे कांग्रेस द्वारा मुस्लिम तुष्टीकरण की एक और कोशिश के रूप में देखा गया था। समिति की रिपोर्ट आ चुकी है, जिसे संसद में पेश भी कर दिया गया है। रिपोर्ट पेश होने के बाद ऐसा कुछ भी नजर नहीं आया जिससे वे चिंताएं गहरातीं जो समिति के गठन के समय व्यक्त की जा रही थीं। यदि चिंता जैसी कोई बात है तो वह यह कि समिति ने मुस्लिम समाज की समस्याओं पर समग्र रूप से दृष्टिपात करने से बचने जैसे संकेत दिए, यद्यपि समिति के कामकाज के संदर्भ में दावे ऐसे ही किए गए हैं। इसके साथ ही समिति ने जो निष्कर्ष व्यक्त किये वे मुस्लिम समाज में शैक्षणिक विकास को प्रोत्साहित करने तथा उसे मुख्यधारा में लाने के उसके घोषित इरादे के संगत प्रतीत नहीं होते। समता और समानता को प्रोत्साहित करने के प्रयास बेशक सराहनीय हैं, लेकिन इस समिति के कामकाज में एक बड़ी खामी है, क्योंकि वह मुस्लिम समाज के भीतर के उन विषयों का

अध्ययन नहीं कर सकी जिनका सीधा संबंध इस समाज के राष्ट्रीय धारा में जुड़ने से है। समिति के अनुसार देश ने काफी प्रगति की है, लेकिन इसमें शामिल 13.40 प्रतिशत मुस्लिम मानव विकास संकेतकों के लिहाज से बहुत पीछे हैं। इसके बाद यह रिपोर्ट मुस्लिमों के परेशानियों के लिए हर किसी को दोश देने में लग जाती है। समिति के अनुसार बिल्डर और मकान मालिक मस्लिमों को मकान बेचते या किराए पर नहीं देते हैं, स्कूलों में वातावरण इतना असहज है कि मुस्लिम बच्चों के माता –पिता को यह अहसास होता है कि उनके बच्चों का वहां स्वागत नहीं किया जाता, मुस्लिम स्नातकों को निजी या सार्वजनिक क्षेत्रों में नौकरी नहीं मिलती और यही कारण है कि वे स्व–रोजगार की ओर उन्मुख होते हैं। स्व–रोजगार भी उनके लिए सहज नहीं है, क्योंकि बैंक उन्हें ऋण देने से परहेज करते हैं। ये वे कुछ शिकायतें हैं जो मुस्लिम ने समिति के समक्ष रखी। आश्चर्यजनक है कि समिति ने इन शिकायतों पर कोई सवाल उठाए बिना उन्हें अक्षरशः स्वीकार कर लिया।

सच्चर समिति आगे भी मुस्लिमों की खराब दशा के लिए दूसरों को दोष देना जारी रखती है, लेकिन उसने इस पर विचार करना जरूरी नहीं समझा कि देश में रहने वाले दूसरे अल्पसंख्यक समुदाय–ईसाई, सिख या फिर पारसी को मानव जीवन के किसी भी क्षेत्र में ऐसी कोई शिकायत क्यों नहीं है? चूंकि समस्याएं अनेकानेक हैं और केवल मुस्लिम समुदाय से संबंधित हैं इसलिए यह अपेक्षा थी कि समिति इनकी तह तक जाने की कोशिश करेगी, लेकिन ऐसा लगता है कि वह अपने अध्ययन को लेकर सब कुछ पहले ही तय कर चुकी थी। शायद अपने कामकाज के संदर्भ सच्चर समिति को इस बड़ी खामी का एहसास था इसीलिए उसने इस कमजोरी को 'टमर्स ऑफ रेफरेंस' के आवरण तले दबाने की चेष्टा की। समिति की दलील है कि 'टमर्स ऑफ रेफरेंस' के तहत उसे केवल समानता से संबंधित मुद्दों के अध्ययन के लिए कहा गया था।

सच्चर समिति को यह देखना चाहिए था कि जहां राष्ट्र पर समुदायों के बीच समता और समानता सुनिश्चित करने का दायित्व है। वहीं कुछ जिम्मेदारी समुदायों की भी है। यदि हम इस तथ्य को समझने से इनकार करते हैं तो समस्या का कोई स्थायी और तर्कसंगत समाधान निकल ही नहीं सकता। क्या यह नहीं सोचा जाना चाहिए कि ईसाई, सिख और पारसी समुदाय भारत के ताने–बाने में इतने स्वाभाविक ढंग से कैसे सम्मिलित हो गए? क्या किसी नियोक्ता के गले में ऐसा कोई कानूनी फंदा डालने की जरूरत है जिससे इन समुदायों के लोगों को कार्यस्थल पर पर्याप्त प्रतिनिधित्व मिले? सच्चर समिति को स्वयं से यही सवाल करना चाहिए था और मुस्लिम समुदाय की समस्याओं के समाधान की राह तलाश करनी चाहिए थी। सच्चर समिति ने किस तरह आधारहीन तथ्यों पर आंख मूंदकर भरोसा किया है इसका सर्वाधिक स्तब्धकारी उदाहरण दूसरे अध्याय में मिलता है, जिसमें स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रमों को लेकर मुस्लिम समुदाय के भय का उल्लेख किया गया है। रिपोर्ट कहती है मुस्लिम बहुल इलाकों में पोलियो उन्मूलन अभियान की सफलता की खराब दर

इस भय का एक परिणाम है जिसके तहत मुस्लिमों में यह माना जा रहा है कि यह अभियान मुस्लिमों की जन्म दर कम करने की साजिश है। यह बहुत गंदा आरोप है, लेकिन समिति ने इसकी निंदा करने की जरूरत महसूस की । इस आरोप को अपनी किसी प्रतिक्रिया के बिना प्रस्तुत कर समिति ने एक तरह से इस आरोप को आगे बढ़ाने का ही काम किया है।

उत्तर प्रदेश और देश के दूसरे क्षेत्रों में इस तरह का प्रचार किया जाता रहा है कि पोलियो उन्मूलन के लिये दी जाने वाली दवा मुस्लिमों में जन्म दर घटाने की साजिश है। इसका परिणाम यह है कि देश में मुस्लिम आबादी तो 13.40 प्रतिशत ही है, लेकिन पोलियो प्रभावित बच्चों में 70 प्रतिशत मुस्लिम है। क्या सच्चर समिति को इन आंकड़ों की कोई जानकारी है? इस मामले में भी सच्चर समिति ने यह सोचने की जरूरत नहीं समझी कि देश के दूसरे अल्पसंख्यक समुदायों के मन में ऐसा कोई भय क्यों नहीं है? बेशक मुस्लिम बहुल इलाकों में पोलियो उन्मूलन अभियान के खिलाफ इस तरह का दुष्प्रचार देश के सेकुलर और लोकतांत्रिक ताने–बाने से तालमेल न बिठाने की मुस्लिमों की मनोदशा का आज के दौर में सबसे सटीक उदाहरण हैं।

`यह विडंबना ही है कि समिति ने इस दुष्प्रचार को सिरे से खारिज करने के स्थान पर उसके प्रति एक प्रकार की समझ और सहानुभूति प्रदर्शित की। समिति जिस तरह देश, उसके सभी बच्चों और विशेषकर मुस्लिम बच्चों के स्वास्थ्य के लिए डटकर खड़ी होती नजर नहीं आई उससे समिति के इरादों और उद्देश्यों पर संदेह उभरना स्वाभाविक है।

रिपोर्ट पढ़ने के बाद ऐसा अहसास होता है कि समिति ने प्रारंभ से ही अपनी आंखें बंद कर ली। लिहाजा उसकी सारी कवायद यह साबित करने के लिए आंकड़ें एकत्र करने पर सीमित रह गई कि मुस्लिम समाज जीवन के सभी क्षेत्रों में बहुत पिछड़ा हुआ है और इसका सारा दोष भारतीय राष्ट्र–राज्य तथा बहुसंख्यक हिंदू समुदाय पर मढ़ना है। उसने मुस्लिम की संकीर्ण मनोदशा को चुनौती देने तथा उनमें इन मुद्दों पर अति आवश्यक अंतर–सामुदायिक बहस को प्रोत्साहित देने के संबंध में कुछ भी नहीं सोचा। इसमें कोई दो राय नहीं कि देश में समता और समानता सुनिश्चित करना राष्ट्र–राज्य का प्राथमिक उद्देश्य है।

लेकिन उन दलीलों के आगे झुकना बेहद खतरनाक है जो एकीकरण की प्रकिया को कमजोर बनाती है। दुःखद है कि सच्चर समिति ने यही किया है, लिहाजा हमें निश्चित रूप से इस रिपोर्ट को खारिज कर देना चाहिए। ■

52nd National Conference of ABVP

CHALO HYDERABAD

52nd National Conference of ABVP is going to held in Hyderabad on 25-28 december. The venue of the Conf will be BISON POLO GROUNDS, NEAR PARADE GROUNDS SECUNDERABAD.

Around 4000 delegates through out the country will participate which includes far off states like Andaman, Manipur , Sikkim, Jammu&Kashmir, Chattisgarh, Tamilnadu. Around 400 girls, 150 tribal students' and Prominent personalities will participate in this Conference..

The Conference will be inaugurated by General V.N. Sharma, PVSM, AVSM, Former Army Chief & Member National Security Advisory Board, New Delhi.

The other prominant guests will be Dr. Dayanand Dongaonkor, a well known Academician, former Vice Chancellor presently Secretary General, association of Indian Universities (AIU) New Delhi.and Dr. M.K. Sridhar, Reader, CBS Management Studies, Bangalore University. A Researcher, Activist and Academician. Shri.K.S. Raju, Chairman, Nagarjuna Group of Industries, Hyderabad.

Y.V. Kelkar Youth Award for this year will be given to Dr. Giresh Kulakarni, a Lecturer by profession, HonararyDirector "SNEHALAY" an NGO working for the awareness and rehabilitation of HIV +ve kids particularly of sex workers .■

संसद पर हमले की पांचवीं वर्षगांठ

जरा याद करो कुर्बानी

– यशवीर राघव

जिसका डर था वही हुआ। भारतीय गणतंत्र और राष्ट्रवाद के प्रतिष्ठा–प्रतीक संसद भवन पर हमले की आज पांचवीं बरसी हो गई लेकिन देश की सम्प्रभुता के जीवन्त रूप पर आतंकवादी हमले के मस्तिष्क मोहम्मद अफजल को 20 अक्टूबर को फांसी के तख्ते पर लटकाने के माननीय सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को भारत सरकार ने एक प्रकार से रद्दी की टोकरी में फेंक दिया।

जिन्होंने टेलीविजन पर संसद के हमले का दिल दहलाने वाल दश्य अपनी आंखों से देखा है वे समझ सकते हैं कि यदि उस दिन दिल्ली पुलिस के सिपाहियों ने जान हथेली पर रखकर उस हमले को विफल न किया होता तो शायद पूरा केन्द्रीय मंत्रिमंडल व सभी दलों के राजनीतिक नेतृत्व का सफाया हो गया होता। ऐसे भयंकर राष्ट्रघाती हमले के मुख्य अपराधी को फांसी की सजा देने के न्यायालय के निर्णय की अवहेलना को राष्ट्रद्रोह की विजय और राष्ट्रभक्ति की पराजय के अतिरिक्त कुछ नहीं कहा जा सकता।

लोग मीडिया के जरिये अपना रोष प्रकट कर मांग कर रहे हैं कि अफजल को फांसी दी जानी चाहिये। 90 प्रतिशत से ज्यादा देशवासियों की मांग है कि अफजल को फांसी देना उचित है। परन्तु जो लोग अफजल की मौत की सजा को माफी की मांग कर रहे हैं क्या वे सर्वोच्च न्यायालय की अवमानना नहीं कर रहे हैं? क्या यह उन वीर सिपाहियों के बलिदान का अपमान नहीं है? जिन्होंने राष्ट्रीय अस्मिता के प्रतीक संसद भवन भारत सरकार और राजनीतिक नेतृत्व की प्राण रक्षा के लिए अपने प्राणों की बलि दे दी। इससे बड़ी कृतघ्नता और क्या हो सकती है?

आखिर क्या कारण है कि राष्ट्रीय अस्मिता पर हमले के अपराधी प्राण रक्षा के लिए जम्मू–कश्मीर के मुख्यमंत्री गुलाम नबी आजाद, फारूख अब्दुल्ला, माकपा नेता तारिगामी सब दौड़ पड़े।

यह स्वाभाविक है, वन्देमातरम के विरोध के बाद एक गद्दार और हत्यारे के समर्थन में मुस्लिम नेताओं, कांग्रेसियों, कम्युनिस्टों और सेकुलरिस्टों ने एक साथ खड़े होकर एक खतरनाक मजहबी ध्रुवीकरण का संकेत दे दिया है। ये दोहरे मापदण्ड वाले लोग है जो दोगली बातें करते हैं। जिन कम्युनिस्टों ने दिवाली की रात पूजा कर रहें हिन्दुओं के सर्वोच्च पीठ के प्रमुख श्री शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वती जी महाराज को बिना किसी अपराध के सिद्ध हुये गिरफ्तार किये जाने पर कानून का सम्मान किये जाने की सलाह दी थी।

जो नेतृत्व सत्ता में रहने के लिए रात–दिन सहयोगी दलों को सहता हो, जो सत्ता पाने के लिए रात–दिन सहयोगी दलों की दुत्कार सहता हो जो सत्ता पाने के लिए अपना स्वाभिमान तो क्या राष्ट्रहितों का भी सौदा करने को तैयार हो उससे आतंकवाद के विरुद्ध सीना तानकर खड़ा होने की आशा कैसे की जा सकती है?

क्या इस स्वार्थान्ध, अदूरदर्शी सिद्धांतहीन राजनीति के माध्यम से देश का उद्धार संभव है? क्या जाति, क्षेत्र और दलों में विभाजीत समाज राजनीतिकों के चरित्र को बदल सकता है। यदि नहीं तो इस विखंडित राजनीति का विकल्प राजनीति के बाहर ही खोजना होगा, यही इन शहीदों को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ■

शर्म इनको मगर नहीं आती

एक ओर संसद की आन की खातिर अपनी जान गंवाने वाले शहीदों के सम्मुख पूरा देश नतमस्तक हैं। वहीं दूसरी ओर विदेशी चंदे पर पलने वाले अरूंधति राय जैसे लोग संसद पर हमले के मुख्य आरोपी अफजल को निर्दोष करार देते हुये पुस्तक लिख रहे हैं। उन्हें इस हमले में विदेशी साजिश नहीं बल्कि 'अपना हाथ' होने की बू आती है। जयचंद के इन 21वीं सदी के अवतारों को अपने राष्ट्र के साथ द्रोह करते हुये शर्म महसूस नहीं हो रही। भगवान इनको सदबुद्धि दे। ■

आतंकवाद को रोकने के लिए सरकार क्या करे?

प्रस्तोता – हिमांशु शेखर

आज आतंकवाद एक वैश्विक समस्या बन गया है। हिन्दुस्तान अपनी आजादी के वक्त से ही इस समस्या से जूझ रहा है। समय के साथ आतंकवादी संगठनों ने अपना चाल बदला है, चरित्र नहीं। अत्याधुनिक हथियारों और तकनीकों से लैस आतंकवादियों की कार्रवाई कहीं अधिक विनाशक हो गई है। भारत में आतंकवादियों के दुस्साहस का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि वे धार्मिक आस्था के केंद्र राम जन्मभूमि और अक्षरधाम पर हमला करने से भी बाज नहीं आते। साथ ही लोकतांत्रिक आस्था का केंद्र संसद भवन को भी नहीं छोड़ते और तो और देश के अतिव्यस्ततम शहरों को भी आए दिन आतंकवादी निशाना बनाते रहते हैं।पूरी दुनिया में 2003 के बाद आतंकवादी घटनाओं में बेतहाशा वृद्धि हुई है। इस साल आतंकवादी हमले मरने वालों की संख्या 14,602 रही। यक्ष प्रश्न यह है कि देश का राजनैतिक नेतृत्व आखिर कब तक कुंभकरण निद्रा में सोया रहेगा। आपसी राजनैतिक द्वेष के कारण पोटा जैसे कानून का हटाया जाना, देशद्रोही अफजल के फांसी पर तुष्टिकरण की ओछी राजनीति करना, निश्चय ही देश के लिए अशुभ संकेत है और आतंकवादियों के लिए शुभ। उनकी हौसलाअफजाई जो हो रही है। आतंकवाद के सफाये के लिए सरकार में इच्छाशक्ति का अभाव हैं। सरकार को इस गंभीर समस्या से निपटने के लिए क्या करना चाहिए? इसी मुद्दे पर आधारित है, इस बार की **परिचर्चा।**

अदिति महाविद्यालय में प्राध्यापिका डॉ. तृप्ता शर्मा के मुताबिक आतंकवाद से निपटने के लिए सरकार को कड़े कानून बनाने चाहिए। आतंकवादियों के प्रति सहानुभूति नहीं दिखाना चाहिए। युवाओं खास तौर पर कश्मीर के युआओं को दिग्भ्रमित होने से बचाया जाना चाहिए। इस कार्य में समाजसेवी संगठनों की मदद ली जा सकती है। विदेश नीति में सकारात्मक बदलाव के साथ-साथ पाकिस्तान से आर-पार की बात होनी चाहिए। सरकार को तुष्टिकरण की नीति से भी बाज आना चाहिए। वे आगे कहती हैं कि आतंकवाद से लड़ने वाली नीतियों के निर्माण में युवाशक्ति की भागीदारी आवश्यक है। इस समस्या को दूर करने के लिए राजनैतिक नेतृत्व को दृढ़ इच्छाशक्ति दिखानी होगी। पर दुखद यह है कि कोई भी मुद्दा राजनीति से जुड़ने के बाद समाधान के बजाए समस्या की राह में ही बढ़ने लगते हैं। सरकार अगर युवाशक्ति का सहयोग ले तो आतंकवाद की समस्या को जड़ से उखाड़ा जा सकता है।

प्रबंधन के छात्र राणा प्रसिद्ध कुमार के मुताबिक आतंकवाद को विकराल समस्या बनाने में सरकार सर्वाधिक जिम्मेदार है। अब सरकार को इसे मिटाना भी होगा। पर दिक्कत यह है कि देश के सत्तासीन लोगों पर जनता दबाव नहीं बना रही है। जबकि आतंकवाद के चपेट में आम लोग ही आते है। सरकार को आतंकवाद से निपटने के लिए सख्त कानून बनाना चाहिए। साथ ही कानूनों को लागू करने में भी सख्ती बरतनी चाहिए। सीमावर्ती क्षेत्रों से घुसपैठ न हो, इस बात को भी सुनिश्चित करना होगा। इसके अलावा पाकिस्तान पर अंतर्राष्ट्रीय दबाव का निर्माण करना होगा। जिससे वह आतंकवादियों को शह देने से बाज आए।

अदिति महाविद्यालय में पत्रकारिता की छात्रा छवी के मुताबिक आतंकवाद जैसी विकट समस्या के समाधान में शिक्षा अहम भूमिका निभा सकती है। शिक्षा भी इस तरह की हो जो आने वाली पीढ़ी को गलत रास्ता अख्तियार करने से रोकने में सक्षम हो। साथ ही साथ छवि बेरोजगारी को आतंकवाद की एक प्रमुख वजह मानती है। वे कहती है कि बेरोजगार होने के कारण ही लोग थोड़े से पैसे के लिए हथियार उठाने में सहजता महसूस करते हैं। देश के कानून को कठोर बनाए बिना आतंकवाद को हटाना नामुमकिन है। साथ ही आम लोगों को भी जागरूक बनाया जाना चाहिए। सुरक्षा में बरती जाने वाली कोताही का उल्लेख करते हुए छवि कहती हैं कि मेट्रो ट्रेन में चढ़ने से पूर्व सुरक्षा चेकअप महज एक औपचारिकता रह गई है। जिसका दुरूपयोग आतंकी कभी भी कर सकते हैं। साथ ही आतंकवाद को दूर करने में सरकार को युवाओं की भूमिका भी सुनिश्चित करनी चाहिए।

श्री गुरू नानक देव खालसा कॉलेज के छात्र अमित अरोड़ा के अनुसार आतंकवाद को समाप्त करने के लिए कड़े कानूनों का निर्माण करना होगा। इस मुहिम में गैर सरकारी संगठनों का भी सहयोग लेना चाहिए। किसी भी अपराधी की सजा को माफ करने से पूर्व सरकार और राष्ट्रपति को सेना की राय लेनी चाहिए। क्योंकि किसी भी आतंकवादी के बारे में पूर्ण जानकारी सेना ही दे सकती है। अमित मानते हैं कि आतंकवाद के विरूद्ध जनता में जागरूकता लानी होगी। साथ ही सरकार आतंकवाद को बढ़ावा देने वाले राष्ट्रों के खिलाफ कड़ी रूख अपनाए और आतंकवादियों पर चलने वाले केसों का जल्द से जल्द फैसला सुनाया जाना चाहिए ताकि वे सबक सीख सकें।

अदिति महाविद्यालय में लेक्चरार डॉ. मधु लोमेश इस समस्या के जड़ में जाने की आवश्यकता समझती हैं। उनका मानना है कि आतंकवाद को मिटाने के लिए कश्मीर की समस्याओं पर ध्यान देना होगा। वहा के स्थानीय लोगों के आधारभूत जरूरतों को पूरा करना होगा। ताकि वे आर्थिक विवशता के कारण बंदूक उठाने को बाध्य नहीं हों। वे गांधी जी के कथन का उल्लेख करते हुए कहती है कि नीतियां ऐसी बने जिससे आम आदमी खुद को जोड़ सके। पर दुर्भाग्यवश ऐसा नही हो रहा है। जिससे अविश्वास की लहर फैल रही है। आतंकवाद जैसे मुददे को राजनैतिक स्वार्थ से उपर सुलझाया जाना चाहिए। कानूनों में कठोरता लानी चाहिए। सरकार को पंजाब की घटना से प्रेरणा लेकर कुछ सख्त कदम उठाने चाहिए। साथ ही सरकार गैरजरूरी अंतर्राष्ट्रीय दबावों से मुक्त होकर आतंकवाद के विरूद्ध अपनी स्वतंत्र नीति बनाए।

मगध विश्वविद्यालय के छात्र अजीत कुमार के मुताबिक आतंकवाद से निबटने के लिए सरकार ने अब तक जो कार्य किए हैं, वे नाकाफी हैं। सरकार को आतंकवाद के विरूद्ध आक्रामक रूख अपनाना चाहिए। साथ ही पोटा जैस कडे कानूनों को फिर से लागू करना चाहिए। पाकिस्तान को कड़े शब्दों में कह दिया जाए कि वह आतंकवादियों का साथ देना छोड़ दे। फिर भी अगर पाकिस्तान नही मानता तो सरकार उसे मुंहतोड़ जबावब दे। साथ ही देश की सुरक्षा व्यवस्था को भी कड़ा बनाया जाए। देश के राजनैतिक नेतृत्व को त्वरित निर्णय लने में सक्षम होना चाहिए। ताकि किसी भी आतंकी घटना का तत्काल मुंहतोड जबाब दिया जा सके। आतंकवाद के विरूद्ध जंग जीतने में युवाओं की भूमिका काफी महत्वपूर्ण हो सकती है। इसलिये इस वर्ग की मदद ली जाए।

दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्र वैद्यनाथ झा के अनुसार सरकार को सबसे पहले कश्मीर मुददा सुलझाना चाहिए। क्योंकि भारत में आतंकवाद की जड़ में कश्मीर है। इसके अलावा सरकार को आतंकवाद के खिलाफ ठोस रणनीति अपनाने की जरूरत है। जिसके तहत पाकिस्तान से बातचीत के अलावा आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत बनाना भी शामिल हो। इसके अलावा कठोर कानून बनाया जाना आवश्यक है ही, साथ ही उससे भी अधिक आवश्यक है उन कानूनों को सही तरह से लागू किया जाए। कही–कही सुरक्षा बल कानूनों का दुरूपयोग कर स्थानीय लोगों को परेशान करती है। जिस वजह से भी कुछ लोग बंदूक उठा लेते हैं। दरअसल, आतंकवाद जैसी दुरूह समस्या के समाधन मे आम लोगों की सहभागिता भी अतिआवश्यक है। सरकार को इस ओर भी ध्यान देना चाहिए। ■

सामाजिक समरसता के अग्रदूत डॉ. भीमराव अंबेडकर

– सुभाष शर्मा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघसंचालक श्री गुरूजी के जन्मशताब्दी वर्ष को सामाजिक समरसता वर्ष के नाते पूरे देश भर में मनाया जा रहा है। देश में सामाजिक एकता व समरसता लाने के लिये विभिन्न प्रकार के कार्यकमों का आयोजन हो रहा है। ऐसे में सामाजिक समरसता के लिये जीवन भर संघर्ष करने वाले प्रखर देशभक्त बाबा भीमराव अंबेडकर की प्रेरणादायी स्मृतियां व चिन्तन का देश के आमजन के मानस पटल पर उभरना स्वाभाविक ही है। बाबा साहेब इस शताब्दी के उन गिने चुने भारतीय मनीषियों में से एक हैं जिन्होंने भारत में लोकतंत्र और सर्वपंथ समभाव पर आधारित राज्य व्यवस्था की आधारशिला रखी थी। आदरणीय बाबा साहेब का जीवन अति त्यागमय कर्ममय और संघर्षमय रहा है। महार जाति के अति साधारण परिवार में जन्म होने के कारण उन्हें जिस प्रकार का अन्याय झेलना पड़ा, वह इतना भीषण था कि यदि कोई साधारण व्यक्ति होता तो उसकी कमर टूट गई होती। परन्तु वे बाबा साहेब ही थे जिन्होंने इस अन्याय के विरूद्ध झंडा उठाकर प्रवाहों की दिशा मोड़ने में भी पर्याप्त मात्रा में सफलता पाई। परन्तु सामाजिक समता व समरसता की लड़ाई लड़ते हुये उन्होंने राष्ट्रीय एकता को सदैव ध्रुव तारे के समान आंखों के सामने रखा। इसलिए उनके चिंतन और विचारों को समग्र रूप से समझते हुए आज देश में सामाजिक समरसता के प्रयासों की दिशा तय करनी होगी। राष्ट्र, संस्कृति, धर्म इन सभी के बारे में किया हुआ बाबा साहेब का मूल चिंतन ही हमारा मार्गदर्शक होना चाहिये। परन्तु अज्ञानवश, अहंकारवश बहुत से लोग आपके कार्य को उचित दष्टि से देख नहीं पाये। बाबा साहेब का आंदोलन द्वेष भावना पर आधारित है, ऐसे कहने वालों को बाबा साहेब का यह कथन स्मरण रखना चाहिये,"यदि मेरे मन में द्वेष भाव तथा बदले का भाव होता, तो महज पांच सालों में मैं देश का सत्यनाश कर देता।" देशहित का भाव ही निरंतर आपके मन में होने से आपने ऐसा अविवेक नहीं किया। समाज की एकता के संबंध में आपके विचार को देखकर ही आपके 73वें जन्मदिवस पर तत्कालीन सरसंघचालक श्री गुरूजी ने 'भीमराव साहित्य संघ' के अध्यक्ष श्री शिरीष कडलाक के नाम पत्र लिखकर अपनी भावनाएं व्यक्त करते हुये लिखा, "वंदनीय डॉ. अंबेडकर की पवित्र स्मृति को अभिवादन करना यह मेरा स्वाभाविक कर्तव्य है। राजनीतिक और सामाजिक अवहेलना से क्षुब्ध होकर डॉ. बाबा साहेब ने अज्ञान के दुखों के कदमों में लोट रहे तथा अपमानित अपने समाज के बड़े और महत्वपूर्ण हिस्से को आत्मसम्मानपूर्वक खड़ा किया। यह आपकी करामात असाधरण है। आपने राष्ट्र के उपर असीम उपकार किये है। वे ऐसे श्रेष्ठ हैं कि उनसे उऋण होना कठिन है"। श्री गुरू जी द्वारा व्यक्त इन विचारों से ही स्पष्ट हो जाता है कि यह दोनों महापुरूष, डॉ. अंबेडकर और श्री गुरू जी एक ही ध्येय, सामाजिक समरसता के प्रति समर्पित थे।

बाबा साहेब अंबेडकर के सम्पूर्ण चिंतन को अगर हम देखेंगे तो ध्यान में आयेगा कि आपका आंदोलन हिन्दू समाज का पुनरूज्जीवन करने के उद्देश्य से ही था। " डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर" ग्रंथ के लेखक श्री धनंजय कीर कहते हैं,"पिछले पच्चीस वर्षों में अंबेडकर जी पददलित समाज में पैदा हुये पहले महान क्रांतिकारी थे। आपने हिन्दू धर्म के इतिहास में अभूतपूर्व क्रांति का पर्व आरंभ किया। उस क्रांति का उद्देश्य हिन्दू धर्म का शुद्धिकरण कर उसमें कांति लाना, हिन्दू समाज का पुनर्गठन कर उसका पुनरूज्जीवन करना और उसकी अवनति तथा अवहेलना रोकना यही था। डॉ. बाबा साहब इस देश की एकात्मता के ही प्रेमी कैसे थे, यह आपकी '**शूद्र मूलतः कौन थे**', इस पुस्तक में आपके किये हुये विवेचन से स्पष्ट होता है। इस पुस्तक का प्रमुख आशय यही था कि शूद्र क्षत्रिय थे, यह अनगिनत प्रमाणों के आधार पर सिद्ध किया हुआ सिद्धांत है। वास्तव में यदि आपको हिन्दू समाज से रिश्ता तोड़ना होता तो इतने सारे प्रयास आप करते ही नहीं। इससे भी आगे बढ़ कर हम यह कह सकते है कि आर्यों के मूल निवास स्थान के संबंध में

आपका प्रतिपादित सिद्धांत प्रखर राष्ट्रभक्ति का ही एक उदाहरण है। आर्यों का मूल निवास स्थान हिन्दुस्थान ही है और दलित भी आर्य ही है। इस प्रकार आग्रही वृत्ति से अध्ययन के आधार पर आपने अंग्रेजों के इस दुष्प्रचार का कि आर्य बाहर से आये और उन्होंने यहां के मूल निवासियों को हरा कर, उन्हें दलित बनने पर विवश कर दिया, जोरदार खंडन किया और हिन्दू समाज की एकात्मता का दृढ़ीकरण किया।

डॉ. बाबा साहब की यह धारणा बहुत स्पष्ट थी कि हिन्दू समाज में आ गई त्रुटियों के कारण इस देश को पराधीनता भुगतनी पड़ी। आप आग्रहपूर्वक कहते थे कि हमारे भीतर होने वाले सामाजिक दोष और उन्हें मिल रहा धार्मिक आधार जब तक नष्ट नहीं होते तब तक दिन अच्छे नहीं होंगे। **एनिहिलेशन ऑफ कास्ट** नाम से प्रकाशित पुस्तक में डॉ. बाबा साहब ने कहा है कि जाति भेद ने हिन्दुओं का सर्वनाश किया है। हिन्दू समाज का चातुर्वण्य के आधार पर पुनःसंगठन करना हानिकारक है क्योंकि साधारण जनता के ज्ञानार्जन के अधिकार को नामंजूर कर वह उसे अधोगति की ओर ले जाता है और शस्त्र धारण करने का अधिकार नामंजूर कर उसे पौरूषहीन बनाता है। हिन्दू समाज का पुर्नगठन ऐसे धर्म तत्वों के आधार पर होना चाहिये कि जिनका संबंध समता, स्वतंत्रता और बंधुभाव के साथ हो। बाबा साहब अंबेडकर के इन विचारों को ही मान्यता देते हुये संघ के तृतीय सरसंघचालक श्री बाला साहब देवरस ने पुणे में एक व्याख्यान माला में दिये अपने भाषण में कहा, चातुर्वण्य यह एक व्यवस्था न होकर एक अव्यवस्था है, इसलिये सभी को इसे मिलकर शीघ्रातिशीघ्र हटाना चाहिए।"

महाड़ के चवदार तालाब का सत्याग्रह और नासिक के कालाराम मंदिर प्रवेश संघर्ष के दौरान हिन्दू समाज के व्यवहार के कारण उद्विग्नता से बाबा साहब ने हिन्दू धर्म छोड़ने की 1935 में घोषणा कर दी। परन्तु मुस्लिम या ईसाई बनना माने राष्ट्रीयता से नाता तोड़ना है ऐसा आप निःसंदिग्ध रूप से मानते थे। इसलिये ईसाइयों और मुसलमानों के घेरे रहने पर भी गाडगे महाराज के साथ चर्चा करने पर आपने बौद्ध धर्म स्वीकार किया। स्वतंत्रता, समता, बंधुता, इस तत्वत्रयी के संबंध में बोलते समय आपने स्पष्ट किया कि इस तत्वत्रयी का मंत्र मैंने फ्रांस की राज्यक्रांति से न लेते हुये मेरे धार्मिक गुरू भगवान बुद्ध के उपदेशों से लिया है। बौद्ध धर्म यह भारतीय संस्कृति का ही एक अंग है, इसके बारे में आपके मन में कभी संदेह नहीं था। जब बाबा साहेब ने धर्मांतरण का अंतिम निर्णय लिया तो संघ के प्रचारक श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी आपसे मिलने गये थे। चर्चा के दौरान बाबा साहब ने उनसे कहा मेरे सामने सवाल यह है कि मेरे देहावसान के पहले मुझे अपने समाज के लिये कोई निश्चित दिशा देनी चाहिये। क्योंकि यह समाज अभी तक दलित, पीड़ित, शोषित बना रहा है। इसलिये अब उसमें जो नवजागृति निर्माण हो रही है उसमें एक प्रकार की चिढ़, जोश का होना स्वाभाविक है और इस प्रकार का जो समाज होता है वह कम्युनिज्म का भक्ष्य बनता है, और मैं नहीं चाहता कि अपना यह समाज कम्युनिज्म के अधीन बने। इसलिये उसे कोई न कोई दिशा देना यह राष्ट्र की दृष्टि से मैं आवश्यक मानता हूं।'

बाबा साहब अंबेडकर के विचारों को आगे बढाने के लिए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद शुरू से ही प्रतिबद्ध है। 6 दिसम्बर 1980 से परिषद् ने डा0 बाबा साहब अंबेडकर की पुण्यतिथि को सामाजिक समरसता दिवस के रूप में मनाने का कम शुरू किया जो आज भी राष्ट्रीय स्तर का प्रमुख कार्यकम है। पूरे देश में इस प्रकार के कार्यकम इतनी बडी संख्या में करने वाला परिषद् एकमात्र संगठन हैं। महाराष्ट्र के मराठवाड़ा विश्वविद्यालय का नाम बाबा साहब अंबेडकर के नाम पर रखने के निर्णय के विरोध में हुये आंदोलन को शांत करने का काम व समाज में इसके लिए स्वीकार्यता बनाने का काम परिषद् ने पूरी प्रतिबद्धता के साथ किया, जब नामकरण हो गया तो अंबेडकरवादी कई नेताओं ने कहा कि परिषद् के प्रयासों से ही यह संभव हो पाया है। 1990 में चले मण्डल कमीशन विरोधी आंदोलन के समय भी परिषद् ने छात्र समुदाय को दो हिस्सों में बंटने से रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। टाइम्स ऑफ इंडिया ने लिखा कि यह आंदोलन सफल नहीं हुआ क्योंकि विद्यार्थी परिषद ने इसका समर्थन नहीं किया। बिहार का जहानाबाद जब जातिगत हिंसा से जल रहा था तो परिषद् के कार्यकर्ताओं ने जान की परवाह न करते हुए गांव–गांव जाकर पदयात्रा के माध्यम से सामाजिक समरसता का भाव मजबूत किया और आग को शांत किया।

परिषद् ने कई बार रचनात्मक कार्यकमों के माध्यम से 'हम सब बंधु हैं' का भाव समाज में जागरण करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। दलितों का बाबा नामक पुस्तक में बाबा साहब का एक मंतव्य संग्रहित है, "मैं हिन्दू धर्म का शत्रु हूं, विध्वंसक हूं, इस प्रकार मुझे लेकर टिप्पणी होती है, लेकिन एक दिन ऐसा निकल आएगा कि मैं हिन्दू समाज का उपकार करता हूं इन्हीं शब्दों में मुझे हिन्दू लोग धन्यवाद देंगे।" सच में आज पूरा हिन्दू समाज बाबा साहब के चरणों में नतमस्तक है।

ABVP made huge strides in University elections in Kerala

Thiruvanantapuram: The ABVP had enormous success in the college union elections under the Kerala University which concluded on Wednesday.

ABVP candidates won all seats at the MG college TVM, NSS college Dhanuvachapuram, Ayyapas college Chenganoor and NSS college Cherthala.

In different colleges, the ABVP now has 9 university union councillors. Apart from that ABVP candidate won general seats, association representatives, class representatives at different colleges in Kollam, Alapuzha, Patananthita and Thiruvanantapuram districts. In a historical move ABVP bagged the councillor seat at Kollam SN college.

The ABVP state secretary V.P.Rajeev said that this huge success of ABVP in the elections was a result of the judgement by the student population against the criminalism and violence by the SFI and the betrayal stand taken by them vis-a-vis in the self-financing college issue. The ABVP state unit expressed its gratitude to all the ABVP workers and students who is responsible for this success and congratulated the winning candidates. ■

Asianet Shahina's report & ABVP's victory

MEDIA'S DOUBLE STANDARD

In Kerala there are very few people who are not aware about the background of Muslim-born Asianet journalist and well known Hindu-baiter Shahina. A former SFI leader and a cardholding member of CPM never misses any chance to attack the 'Sangh Parivar'.

Recently, the same Shahina reported about the 'victory' of SFI and KSU in university elections. She reported the news while standing in front of an SFI flag and praising SFI. According to her, the election was a direct fight between SFI and KSU. She took short interviews of SFI candidates and a KSU candidate just to appear 'balanced'. She had also mentioned about few other students union candidates including the Campus Front of Islamic terrorist organization NDF but in her news coverage lasting 3 minutes 28 seconds, there was no mention at all about ABVP!

Similar type of one-sided news questions the authenticity of Asianet news, especially Shahina's reports, into seriously. ■

Karnataka

ABVP protests deteriorating prestige of women varsity

BIJAPUR: ABVP workers staged a dharna in front of the State Women University here on Saturday protesting against its deteriorating prestige.

Manjunath Mise, Prasanna Desai, Srmant Katti, Srdhar Kamble, Sanjay Lingadalli and other leaders addressed the agitating ABVP workers.

They lamented that the University instead of becoming a centre for higher learning was becoming a centre of controversy. They said that allegations and counter allegations were traded almost on daily basis. This would not augur well for the development of the University, they said. They lamented that the allegations would lower the prestige of the University.

They said that an inquiry committee was set up following a series of allegations. The committee should invite the persons and organisations who had made written allegations to the Governor, who is also the Chancellor of the University, they said.

Expressing apprehension that the presence of Vice Chancellor in the University might affect the outcome of the Committee, they demanded that the Vice Chancellor should be asked to go on long leave till the inquiry was over.

They said that there were many groups in the University which were working against one another.

Gopal Chincholi, ABVP leader, said that the controversy about keeping Prof R S Hadimani or sending him back to his original posting in Mysore University was unfortunately gaining more importance.

Hadimani worked as registrar for some time and incidents during that period should be looked into, he said adding that his statement should be recorded.

He appealed to the State Government to dispel all these confusions and make a way for proper development of the University.

Uttar Pradesh

ABVP Karyakartas attacked, several injured

SEVERAL STUDENTS were injured when the activists of Akhil Bhartiya Vidyarthi Parishad, were attacked by Samajwadi Chatra Sabha during the filing of nomination papers for the student union election of Harish Chandra Post- Graduate College here on Tuesday afternoon.

The ABVP candidate for the post of president and his supporter and former general secretary of Mahatma Gandhi Kashi Vidyapeeth (MGKV) student union Neeraj Singh, and some others were also injured in the clash.

Police arrested eight ABVP activists demonstrating outside the district hospital to demand arrest of those who attacked their leaders.

According to information, the nomination process was scheduled to be held from 12 noon to 3 pm. The candidates for the post of president, vice president, general secretary and library secretary were filing their nomination.

After ABVP candidate for the post of president, Shailendra Kumar Pandey, who is also the present vice-president of student union, filed

nomination, his supporters took out a procession from Golghar area. In the meantime, the candidate of Samajwadi Chhatra Sabha supported by the ruling Samajwadi Party, also reached the place from opposite direction.

a few activists of Samajwadi Chhatra Sabha, attacked candidate of president's posts Shailener Kumar and former general secretary of MGKV student union, Neeraj Singh. They were badly beaten up by the supporters of Kameshwar Dixit, candidate of Samajwadi Chhatra Sabha for the post of president. Shailenera and Neeraj were taken to hospital by their supporters. As the news spread, other supporters rushed to the district hospital area and sat on a dharna at the Kabirchaura crossing, When cops asked them to go away, they refused. As a result, cops resorted to lathi charge and arrested eight activists. ■

दिल्ली वि.वि. के कांग्रेसीकरण की मुहिम

अभाविप ने शपथ ग्रहण समारोह का किया बहिष्कार

लम्बे समय से चली आ रही दिल्ली वि.वि. के राजनीतिकरण की एन.एस.यू.आई. की मुहिम और शपथ ग्रहण समारोह में केन्द्रीय मंत्री अर्जुन सिंह को मुख्य अतिथि के तौर पर बुलाए जाने के विरोध में अ.भा.वि.प. के कार्यकर्ता डूसू उपाध्यक्ष विकास दहिया ने समारोह का बहिष्कार किया। इस शपथ ग्रहण समारोह से दो दिन पहले अर्जुन सिंह को मुख्य अतिथि के नाते बुलाने के विरोध में परिषद् के कार्यकर्ताओं ने डूसू कार्यालय के बाहर जमकर प्रदर्शन किया। परन्तु शांतिपूर्ण तरीके से प्रदर्शन कर रहे परिषद् के कार्यकर्ताओं को पुलिस ने वहां से खदेड़ना चाहा। परिषद् के कार्यकर्ताओं द्वारा विरोध करने पर पहले पुलिस ने लाठीचार्ज किया और बाद में परिषद् के सभी प्रमुख कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर पुलिस स्टेशन ले जाया गया तथा उन पर केस दर्ज किया गया। इस सब कार्यवाही का मकसद था कि किसी तरह परिषद् के कार्यकर्ता डरकर चुप बैठ जाएं तथा विश्वविद्यालय में आने पर अर्जुन सिंह का विरोध न करें।

परन्तु विद्यार्थी परिषद् के कार्यकर्ताओं ने पुलिस की इस ज्यादती की परवाह न करते हुए जोरदार तरीके से अर्जुन सिंह का विरोध किया।

समारोह वाले दिन जब अर्जुन सिंह द्वारा मंच पर दिल्ली वि.वि. छात्र संघ (डूसू) की नवनिर्वाचित अध्यक्षा अमृता धवन को शपथ दिलाने के बाद विद्यार्थी परिषद् के कार्यकर्ता विकास दहिया को उपाध्यक्ष पद की शपथ लेने के लिए मंच पर आमंत्रित किया गया। विकास दहिया ने मंच पर आकर विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि आप सबने मुझे चुना है इसलिए मैं यहां आया हूं। परन्तु मैं अर्जुन सिंह जैसे व्यक्ति की उपस्थिति में शपथ कदापि ग्रहण नहीं करूंगा।

विकास दहिया ने मंच से ही एन.सी.आर.टी. की पुस्तकों में जाटों को लुटेरा तथा श्रीराम और श्रीकृष्ण को काल्पनिक पुरुष बताये जाने जैसी अपमानजनक बातों के लिए श्री अर्जुन सिंह को जिम्मेदार ठहराया तथा कहा कि अपने पूर्वजों का अपमान करने वाले व्यक्ति के हाथों शपथ लेना मैं अपना अपमान समझता हूं। इतना कहने के बाद उन्होंने अपनी जेब से काली झंडी निकाली तथा शपथ ग्रहण समारोह का बहिष्कार करते हुए मंच से नीचे उतर आये। उनके मंच से नीचे उतरते ही कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थी परिषद् के पचास के लगभग कार्यकर्ता भी हाथों में काली झंडियां लिए अपने स्थानों पर खड़े हो गए तथा अर्जुन सिंह की राष्ट्रविरोधी शिक्षा नीतियों के खिलाफ नारे लगाते हुए शपथ ग्रहण समारोह का बहिष्कार कर बाहर आ गए।

विद्यार्थी परिषद् द्वारा एक बार फिर से यह सिद्ध किया गया कि परिषद् के कार्यकर्ता अन्याय और अत्याचार के खिलाफ संघर्ष के लिए हमेशा कटिबद्ध हैं तथा आने वाले दिनों में भी अर्जुन सिंह सहित भारतीय संस्कृति के विरोधियों को परिषद् का जोरदार विरोध इसी प्रकार झेलना पड़ेगा। ■

शिक्षा में परिवर्तन हो: एबीवीपी का शिमला में आह्वान

प्रदेश स्तर की रैली में उमड़ा 15 हजार से अधिक छात्रों का जनसमूह

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने हिमाचल प्रदेश और देश में शैक्षणिक बदलाव के लिए राजनीतिक परिवर्तन लाने की अपील की है। साथ ही विद्यार्थी समुदाय को अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक वर्ग में बांटने को देश की एकता के लिए खतरा बताते हुए विदेशी विश्वविद्यालयों के भारत में प्रवेश और शिक्षा के व्यावसायिकरण का डटकर विरोध करने का फैसला किया है।

आइस स्केटिंग रिंक में परिषद् द्वारा **'शैक्षणिक भ्रष्टाचार और बेरोजगारी'** के विरूद्ध आयोजित विशाल रैली में परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री केएन रघुनंदन ने कहा कि जयप्रकाश नारायण क नेतृत्व में सत्तर के दशक में हुए राष्ट्रव्यापी आंदोलन की तरह एबीवीपी अब नया आंदोलन शुरू कर रही है। रैली में प्रदेश के सभी 12 जिलों से आए 15 हजार से ज्यादा छात्र–छात्राओं ने हिस्सा लिया। श्री रघुनंदन ने कहा कि विद्यार्थी परिषद देश में विदेशी विश्वविद्यालयों को लाभ कमाने के उद्देश्य से आने की इजाजत नहीं देगी। लेकिन इससे पहले केंद्र और राज्य सरकारों को देशभर की सरकारी शैक्षणिक शिक्षा संस्थानों की हालत में बुनियादी बदलाव लाना होगा। उन्होंने कहा कि सोनिया गांधी और अर्जुन सिंह ने एक साजिश के तहत देश के विद्यार्थी समुदाय को पहली बार अल्पसंख्यक–बहुसंख्यक में बांटकर देश को तोड़ने की कोशिश की है। अल्पसंख्यक शिक्षा संस्थानों को अनुसूचित जाति व जनजाति के आरक्षण के दायरे से अलग रखा गया है। परिषद नेता ने कहा कि 1991 में सरकार प्रति विद्यार्थी हर साल 7700 रूपये खर्च करती थी। मनमोहन सिंह सरकार ने इसे घटाकर 5500 रूपये कर दिया है। हिमाचल प्रदेश की शैक्षणिक परिस्थिति के बारे में उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री प्रदेश में विदेशी विश्वविद्यालय खोलने की बात कर रहे हैं। सरकार को अपने शिक्षा संस्थानों पर खुद ध्यान देना होगा। यहां शिक्षकों के सैकड़ों पद खाली हैं। कुलपति समेत शिक्षा क्षेत्र के प्रशासक भ्रष्टाचार में लिप्त हैं और राज्य में 13 लाख बेरोजगार हैं। रैली को हिमाचल प्रांत के संगठन मंत्री बिहारी लाल शर्मा, मांचली ठाकुर, योगराज समेत कई नेताओं ने संबोधित किया। इस अवसर पर भाजपा के विधायक सतपाल सत्ती व विरेंद्र कंवर, भारतीय मजदूर संघ, आरएसएस, विहिप व परिषद के अनेक पदाधिकारी भी मौजूद थे। ■

रैली की मुख्य बातें

–शिमला में उमड़े छात्रों के सैलाब में इतनी संख्या थी जिसका धड़ आईस–स्केटिंग रिंक सभास्थल में था तथा पूंछ 6 कि.मी. दूर विधान सभा तक पहुंची थी।

–प्रदेश भर से आए विद्यार्थियों में इतना उत्साह था कि सुबह से चले भूखे–प्यासे अपने गंतव्य पर पहुंचने तक जोर–शोर से प्रदेश सरकार के खिलाफ नारेबाजी कर रहे थे।

–पूरा शिमला शहर विद्यार्थी परिषद के झंडियों, बैनरों से दूल्हन की तरह सजाया गया था।

–दुर्गम क्षेत्र से कठिनाइयों के बावजूद भी सभा स्थल पर जन–जातियों क्षेत्रों की छात्र–छात्राएं भारी संख्या में उपस्थित थे।

–रंग–बिरंगे कपड़ों में आए छात्र–छात्राएं ऐसे लग रहे थे मानों विभिन्न रंगों से एकता और भी गाढ़ी हो रही है। सभी का एक उद्देश्य है– प्रदेश में शैक्षणिक भ्रष्टाचार व बेरोजगारी के खिलाफ आवाज बुलंद करना।

–आईस–स्केटिंग रिंक का प्रांगण अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के कार्यकर्ताओं के उत्साह के साथ ताल से ताल मिला रहा था।

–पूरे शिमला में सभी के मुख से एबीवीपी निकल रहा था। बच्चा हो, बुजुर्ग हो, व्यापारी हो या कर्मचारी हो। सभी कह रहे थे युवाओं का ऐसा सैलाब शिमला में कभी नही देखा।

मध्य भारत प्रांत का 39वां प्रदेश अधिवेशन सम्पन्न

परिषद् विश्व का सबसे बड़ा व अनुशासित छात्र संगठन: अवधेशानंदगिरिजी

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् विश्व का सबसे बड़ा व अनुशासित विद्यार्थी संगठन है। विश्व की तमाम खुफिया एजेंसियों ने इस बात को स्वीकारा है। ऐसे में परिषद् के कार्यकर्ताओं से समाज व देश की अपेक्षाएं बढ़ गई हैं। परिषद को अपने सामर्थ्य से देश को दिशा देना चाहिए।

ये विचार अभाविप मध्य भारत के 39वें प्रदेश अधिवेशन के उद्घाटन अवसर पर स्वामी श्री अवधेशानंदगिरिजी ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि भारत विश्व के सबसे अधिक युवाओं वाला देश है। नासा के वैज्ञानिकों में लगभग 45 प्रतिशत भारतीय हैं। अन्य देशों में भी भारतीयों की अच्छी–खासी संख्या है। उद्घाटन सत्र के मुख्य वक्ता व अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री सुनील आंबेकर ने कहा कि परिषद् की सदस्यता लेने वालों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। छात्र शक्ति को देश व समाज को समर्पित करना ही विद्यार्थी परिषद का उद्देश्य है। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता के पश्चात कई विचारधाराओं वाले युवाओं के संगठन बने है लेकिन समय के साथ सबका अस्तित्व खत्म हो गया। आंध्र प्रदेश में नक्सलवाद का जहर फैल रहा था जिसे हमारे कार्यकर्ताओं ने ही रोका है। आज समाज हित में कार्य करने वाला अकेला संगठन है विद्यार्थी परिषद्।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, मध्य भारत के 39वें प्रांतीय अधिवेशन के तहत कृष्णपुरा छत्री पर आयोजित खुला अधिवेशन में अभाविप के उत्तर क्षेत्र के क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री रमेश पप्पा ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हमारे देश के लाखों लोगों का खून पाकिस्तान ने बहाया है। ऐसे लोगों को छत्रछाया प्रदान करने वाले सत्ताधारी देश को चलाने का नही, बल्कि बेचने का कार्य कर रहे हैं।

श्री रमेश पप्पा ने कहा कि जब संसद पर आतंकवादी हमला हुआ था, तो हमारे जवानों ने अपने खून बहाकर देश के नेताओं की जानें बचाई थी। अब जब अफजल गुरू को फांसी देने की बात आई तो ये ही नेता उसे बचाने में लगे हैं। ऐसे नेताओं को तो चौराहे पर उल्टा लटका देना चाहिए।

खुले अधिवेशन में अभाविप के सर्वश्री रवि तिवारी, सुब्रतो गुहार, कमलेश वैष्णव, दिग्विजय सिंह ने उपस्थित छात्रों को संबोधित किया। ■

SC asks Centre to tackle ragging

The Supreme Court constitutes a committee to prevent ragging in educational institutions.The committee to be headed by former CBI Director RK Raghavan will suggest ways to curb ragging menace in educational institutions.

The Bench has asked the Centre to constitute a committee on the lines of one, which recently came out with a slew of steps to curb violence and use of money power in the elections to university student unions.

The Court has granted the Centre a period of three weeks to take action in this regard. Other members of the committee will be decided by the centre. Meanwhile, Human Resource Development Minister Arjun Singh has welcomed the Supreme Court's direction to curb ragging. 'The observation of the court is welcome and we would render all help for it. These incidents(of ragging) influence all and have drawn attention of everyone including the court,' singh said.He also added that his ministry was ready to render all necessary help in this regard.

ABVP Gen Sec K.Raghunandan also welcome the decision and said it will help to curb the menace of ragging in campuses.

The 24th State Conference of West Bengal

Govt should take strong steps to curb terrorism: Bishnu Das

The 24th State Conference of ABVP was held on and from 24th to 26th Nov.(2006) in the frontier heritage town Coochbehar, West Bengal. 400 Delegates from all over the districts of west Bengal including Sikkim attended the Conference. The opening ceremony was held on 24th Nov. 2006 at Sarada Sishutiraha campus at Sarda Nagar. The chief Guest of the conference smt. Gita Gunde inaugurated the auspicious by kindly a Light.

Sri Rabi Ranjan Sen and Sri Billeswar Singh were duly elected state President and state secretry respectively. Members of ABVP organized a big procession through out coochbehar town in the after noon on 25th Nov. Later on, an opening meeting was held at Sahid bag Maidan. The meeting was addressed by the organizing secretary of the Orissa state Sri Bishnu Das, State President Sri Ravi Ranjan sen, state secretary Billeswar Singha and student Leader Sri ***Partha Barma.***

While speaking on issue of National Security, Bishnu Das said that the Islamic terrorists are playing a vital role from Bangladesh and there are more than one hundred training centers for the training of terrorists. He demanded that both the Central and State Govt. should take steps against them. Sri Arinndam Mukharjee critised left govt of west Bengal in his speech and said that this govt is not at all aware of the defence of the state . he further blamed that govt is busy in creating pressure on the central Govt. to watch the interests of China. The meeting was conducted by Smt. Nanda Sarkar(Unit Sectetry of Coochbehar). ■

मध्य भारत प्रांत

समरसता यात्रा सम्पन्न

परम पूज्य श्री गुरूजी एवं श्री चन्द्रशेखर आजाद जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् मध्य भारत द्वारा बैतूल यानी वो स्थान जहां श्री गुरू जी जेल बन्द रहे, से समरसता यात्रा प्रारम्भ की गई। 26 नवम्बर को यात्रा का शुभारंभ बैतूल जिला जेल परिसर के बाहर सार्वजनिक कार्यक्रम के माध्यम से किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि म.प्र. शासन के राजस्व मंत्री श्री कमल पटेल एवं मुख्य वक्ता अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के अखिल भारतीय जनजातीय विद्यार्थी कार्य प्रमुख श्री पी. सूर्यनारायण रहे।

श्री कमल पटेल ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि भारत माता को आजादी दिलाने में अनेक युवाओं ने अपने प्राणों की आहुति दी थी, उन्होंने सोचा था कि भारत पुनः विश्व गुरू बनेगा परन्तु जितना परिवर्तन होना चाहिए था वह नही आया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के अखिल भारतीय जनजातिय विद्यार्थी कार्य प्रमुख श्री पी. सूर्यनारायण ने कहा कि सामाजिक समरसता केवल नारा नही प्रतिबद्धता है। देश में समानता के बारे में खूब चर्चा हो रही है, परन्तु प्रयास कम हो रहे हैं। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् द्वारा समानता की भावना जागृत करने के लिए जनजागरण किया जा रहा है। विघटनकारी तत्वों से लड़ने के लिए समरसता का मंत्र ही सर्वोत्तम हथियार है। बैतूल से प्रारंभ हुई यात्रा होशंगाबाद, हरदा,, खण्डवा,, खरगोन, बड़वानी, झाबुआ, धार, महू, इन्दौर आदि जिलों से होकर 01 दिसम्बर को अखिल भरतीय विद्यार्थी परिषद के 39वें प्रांतीय अधिवेशन में समाप्त हुई। यात्रा अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद के जन्म स्थान भावरा, जिला झाबुआ, संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अंबेडकर के जन्म स्थान महु सहित 32 स्थानों पर गई।

यात्रा के पूर्व बैतूल जिले के जनजातियों विद्यार्थियों का दो दिवसीय जिला सम्मेलन भी बैतूल में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में जिले के 13 स्थानों से 330 छात्र, 109 छात्रा कुल 439 विद्यार्थी उपस्थित रहे। ■

पंजाब का प्रांतीय अधिवेशन संपन्न

सरकार की अनदेखी से बढ़ रहा है शिक्षा का व्यापारीकरण : स्वतंत्र मुरगई

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् का 36वां प्रांतीय अधिवेशन पठानकोट में संपन्न हुआ। अधिवेशन का उद्घाटन सी. बी.आई. के पूर्व निदेशक स. जोगिन्द्र सिंह ने किया।

इस अवसर पर श्री सिंह ने छात्र शक्ति को देश की आंतरिक और बाह्य सुरक्षा पर मंडराते खतरों के बारे में चेतावनी देते हुए कहा कि आज इस्लामिक आतंकवाद, नक्सलवाद, बंग्लादेशी घुसपैठ, पड़ोसी देशों की नीतियां आदि चुनौतियां देश के सामने हैं। इसलिए समाज को जागरूक रहने की अति आवश्यकता है।

इस मौके पर गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति स्वतंत्र मुरगई ने शिक्षा के बढ़ते व्यापारीकरण पर चिंता प्रकट की तथा कहा कि सरकार द्वारा शिक्षा क्षेत्र की अनदेखी तथा धन उपलब्ध न करवाने के कारण शिक्षा महंगी हुई है। इस क्षेत्र में धीरे–धीरे व्यापारिक मनोवृत्ति के प्रतिष्ठानों का कब्जा हो रहा है जिस कारण शिक्षा का अधिकार सामान्य वर्ग से छिनता जा रहा है। उन्होंने शिक्षा को रोजगारोन्मुखी बनाने पर बल दिया।

मुख्य वक्ता परिषद् के राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुनील अंबेकर ने कहा कि आज परिषद युवाओं के लिए 'शिक्षा और रोजगार' की मांगों को लेकर संघर्ष कर रहा है और राष्ट्र की चुनौती का सामना करने के लिए तथा भारत माता की सेवा में तन, मन, धन समर्पित करने वाले देशभक्त नागरिक खड़ा करने का कार्य भी निरंतर 58 वर्षों से कर रहा है। अधिवेशन में संघ के प्रचारक कश्मीरी लाल जी का मार्गदर्शन 'श्रीगुरू जी और युवा' विषय पर हुआ। नई कार्यकारिणी में पंकज महाजन और कमलजीत सिंह पुनः प्रदेश अध्यक्ष व प्रदेश मंत्री चुने गए। अधिवेशन में रमेश पप्पा, बिहारी लाल, बलजिन्द्र ठाकुर, राष्ट्रीय मंत्री मुक्ता शर्मा, सहित कुल 14 स्थानों से 108 कार्यकर्ताओं ने हिस्सा लिया। ■

26th State Conference of Kerala

Youth must take initiative to fight Terrorism : P. Parmeshwaran

ABVP 26th conference of Kerala state was conducted at Pandalam in Pathanamthitta district. 228 participants from 47 places of 13 districts participated in this conference.

The Conference was inaugurated by Padmshree P. Parameswaran ,Director of Bharathya Vichara kendram. In his inaugural speech he described about the essentiality of patriotic youth to fight against terrorist activities in our country. He blamed the communist parties for their support to terrorism on Communal basis. He said the motive of these terrorist activities is to change India a muslim country.

Seminar on ' Problems in Higher Education' was a special attraction in the conference. Three resolutions named 1.Education Problems 2. General Situation 3. Problems of sc/st students were adopted unanimously in this conference. Students participation in the discussion was very creative. Various students made amendments in the resolutions.

छत्तीसगढ़ का 16 वां प्रांत अधिवेशन सम्पन्न

शिक्षा, सुरक्षा व समरसता विषयों पर छात्रों द्वारा गहन चिंतन कर संकल्प ग्रहण

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्, छत्तीसगढ़ का 16वां प्रान्तीय अधिवेशन राजनांदगांव में प. पू. गोलवलकर जी नगर, लक्ष्मीबाई विद्यालय में 24, 25 व 26 नवंबर को सम्पन्न हुआ। अधिवेशन में पूरे प्रान्त के सुदूर अंचल से आये 470 शिक्षाविद्, प्राध्यापक, छात्र–छात्राओं ने हिस्सा लिया।

अधिवेशन में 24 नवंबर को **त्रिवेणी संगम** तीन महापुरूषों श्री बलदेव प्रसाद मिश्रा, श्री पदुम लाल तथा श्री गजानंद माध व मुक्तिबोध के नाम पर प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया। इस प्रदर्शनी में विभिन्न सामाजिक समस्याओं एवं विद्यार्थी परिषद् गतिविधियों को प्रदर्शित किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन मुख्य अतिथि राजानांदगांव की प्रथम नागरिक माननीया महापौर श्रीमती शोभा सोनी द्वारा किया गया।

अधिवेशन का विधिवत उद्घाटन श्री बालक दास जी राम त्यागी एवं राष्ट्रीय मंत्री श्री विष्णु दत्त शर्मा के कर कमलों द्वारा मां सरस्वती, स्वामी विवेकानंद के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन कर किया गया। मुख्यवक्ता श्री विष्णु दत्त शर्मा ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में कहा कि देश की आजादी के पश्चात् युवा शक्ति को दिशा देने का काम तथा व्यक्ति निर्माण के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन का काम परिषद् ने किया है। उन्होंने कहा कि परिषद् राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के लक्ष्य प्राप्ति के लिए छात्र शक्ति को संगठित कर गत 57 वर्षों से कार्य कर रही है। मुख्य अतिथि श्री बालक दासजी ने अपने उद्बोधन में देश के नवनिर्माण में युवाओं की भूमिका के बारे में विस्तार से बताया और युवाओं को नम्रता के साथ ही विस्फोटक भूमिका भी निभाने को लेकर आह्वान किया। स्वागत समिति के सचिव श्री मधुसूदन यादव ने कार्यक्रम में आये छात्रशक्ति व अन्य अतिथियों का आभार माना।

अधिवेशन में शिक्षा व सुरक्षा विषयों पर दो प्रस्ताव पारित किए गए। इन प्रस्तावों में प्रदेश के गिरते हुए शिक्षा स्तर, बिगड़ती सुरक्षा व्यवस्था तथा अन्य समस्याओं पर चिंता प्रकट की गई।

अधिवेशन के दौरान विशाल शोभा यात्रा का आयोजन किया गया। यह शोभा यात्रा नगर के मुख्य मार्गों से होते हुए स्तंभ चौक पर विशाल खुले अधिवेशन के रूप में परिवर्तित हो गई। इस खुले सभा के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री सुनील अंबेकर, मुख्य वक्ता राष्ट्रीय मंत्री श्री विष्णु दत्त शर्मा , प्रदेश अध्यक्ष व प्रदेश मंत्री सहित छात्र नेताओं ने शिक्षा, सुरक्षा एवं समरसता पर विचार व्यक्त किये।

अधिवेशन में क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री कमलेश सिंह ने भारतीय समाज में सामाजिक समरसता विषय पर विचार प्रकट किए। श्री महेश शर्मा तथा विजय मानिकपुरी पुनः प्रदेश अध्यक्ष व प्रदेश मंत्री निर्वाचित हुए। ■

देश की आंतरिक सुरक्षा के लिये युवा शक्ति तैयार रहेः कैलाश शर्मा

पश्चिमी उत्तर प्रदेश विद्यार्थी परिषद् का प्रांत अधिवेशन गाजियाबाद में सम्पन्न हुआ। अधिवेशन के मुख्य वक्ता परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. कैलाश शर्मा ने कहा कि आंतरिक सुरक्षा को सबसे ज्यादा खतरा आतंकवाद से है। उन्होंने युवाओं को इससे निपटने के लिए पूरी तरह तैयार रहने का आह्वान किया। अधिवेशन का उद्घाटन सी.बी. आई. के पूर्व महानिदेशक जोगिन्दर सिंह ने किया। श्री सिंह ने कहा कि हमारे देश के नेताओं के पास राष्ट्र की सुरक्षा व आतंकवाद से निपटने की न तो इच्छाशक्ति है और न ही समय है। उन्होंने कहा कि देश के सुखद भविष्य के लिये युवा पीढ़ी को आगे आना चाहिए।

अधिवेशन में प्रदेश की शैक्षिक व वर्तमान स्थिति को लेकर चिन्ता व्यक्त की गयी व इसी सन्दर्भ में दो प्रस्ताव भी पारित किये गये। इस सत्र के लिये नये प्रदेश अध्यक्ष व मन्त्री का निर्वाचन भी हुआ जिसमें प्रदेश अध्यक्ष राकेश चन्द्र चतुर्वेदी व प्रदेश मंत्री नितेश सिंह तोमर निर्वाचित हुए। अधिवेशन में प्रमुख रूप से राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री अतुल कोठारी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक डॉ. दिनेश जी, क्षेत्रीय संगठन मंत्री दिनेश कुमार, राष्ट्रीय मंत्री धर्मपाल सिंह उपस्थित रहे। अधिवेशन में 77 स्थानों से 639 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

बिहार का प्रांतीय अधिवेशन सम्पन्न

भारत की सुरक्षा खतरे में - रमेश पप्पा

अरूणाचल प्रदेश के संबंध में चीन के राजदूत के बयान पर केन्द्र सरकार की चुप्पी से विद्यार्थी परिषद ने गहरा आक्रोश व्यक्त किया। परिषद ने राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति बढते खतरे से आमजनों को आगाह करते हुए इस दिशा में जागरूक रहने का आह्वान किया। सहरसा में प्रांतीय अधिवेशन के दौरान शोभा यात्रा के बाद नगर परिषद् मैदान में आयोजित खुला अधिवेशन को संबोधित करते हुए विश्व विद्यार्थी युवा संघ के महामंत्री रमेश पप्पा ने अरूणाचल के मुद्दे पर खास कर वामपंथी दलों को आड़े हाथों लिया। मुख्य वक्ता पप्पा ने कहा कि दुर्भाग्य की बात है कि हमारे देश के चंद लोगों के आदर्श चीन के चाउ–माउ है। अफजल को फांसी देने का कुछ लोगों द्वारा किये जा रहे विरोध की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि जब संसद पर हमला हुआ तो उस समय सभी राजनीतिक दलों ने एक स्वर से सख्त कारवाई की बात कही। लेकिन क्या कारण है कि इस मामले में जब मुख्य साजिशकर्ता अफजल गुरू को फांसी देने की बारी आई तो उनमें से कुछ सुर बदल कर माफी देने की वकालत कर रहे हैं। काश्मीर से अंतरराष्ट्रीय छात्र नेता श्री पप्पू ने वहां की स्थिति का जिक्र करते हुए सवाल किया कि रात के अंधेरे में निर्दोष लोगों को मौत के घाट उतारना क्या जेहाद है? बंगलादेशी घुसपैठिये नेपाल के रास्ते प्रवेश पर माओवादियों द्वारा बिहार में गड़बड़ी फैलाये जानें आदि कई मुद्दों का जिक करते हुए श्री पप्पा ने कहा कि देश की सुरक्षा के साथ खिलवाड़ करने वालों को मुंहतोड़ जवाब देने को हम तैयार हैं। उन्होंने परिषद कार्यकर्ताओं से अपील किया की, कि देश विरोधी तत्वों के प्रति चौकन्ना रहकर उनके खात्में में सहयोग करें। विद्यार्थी परिषद के प्रदेश सहमंत्री विशाल सहनी ने केन्द्रीय शिक्षा नीति की आलोचना करते हुए राज्य के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को भी चेताया कि वे छात्रों के साथ किये गये वादे को पूरा करें अन्यथा विरोध झेलने को तैयार हो जाय। उन्होंने परिषद का स्टैंड साफ करते हुए कहा कि एक वर्ष के लिए तो हमने माफ किया लेकिन अब आगे हम कुछ सुननें वाले नहीं हैं। प्रदेश सहमंत्री कुमारी ज्योत्स्ना ने आधी आबादी की समस्याओं का जिक्र करते हुए कहा कि परिषद इनकी प्रगति की दिशा में कार्यरत हैं। ■

राजस्थान का 42वां प्रदेश अधिवेशन सम्पन्न

देश अनेक सदियों से लड़ रहा है हारती हुई लड़ाई -सूर्यकान्त बाली

वरिष्ठ पत्रकार एवं चिंतक सूर्यकांत बाली ने कहा कि हमारा देश अनेक सदियों से हारती हुई लड़ रहा है, लेकिन देश के राजनेता, बुद्धिजीवी वर्ग का इस पर कोई चिंतन नहीं होना चिंतन का विषय है।

वरिष्ठ पत्रकार सूर्यकान्त वाली अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के 42वें प्रदेश अधिवेशन के विधिवत् उदघाटन के अवसर पर मुख्य अतिथि पद से बोल रहे थे। उदघाटन कायक्रम के प्रमुख वक्ता अभाविप के के राष्ट्रीय अध्यक्ष कैलाश शर्मा थे जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रदेश अध्यक्ष राजीव सक्सेना, प्रदेश मंत्री वीरेन्द्र सिंह, संभाग प्रभारी हरिओम् सिंह राठौड़ एवं समाजसेवी फतेह चन्द्र श्यान सुखा उपस्थित थे।

श्री बाली ने कहा कि यह देश किस प्रकार हारी हुई लड़ाई लड़ रहा है इसका ज्वलंत उदाहरण ' वंदेमातरम् गीत का विरोध है ' जिसमें हिन्दू वर्ग बेवजह गाने नही गाने की फसाद में पड़ा है, जो सीधे तौर पर एक मां की हारती हुई स्थिति को देख रहा है, क्योंकि स्वयं निर्बल है। उन्होंने कहा कि वर्तमान में मनुष्य धन व विद्या की पूजा कर रहा है किन्तु शस्त्र को भूल गया है, जिससे सोने की चीड़िया कहाने वाला देश दरिद्र बन गया है। इसलिये अब समय आ गया है कि सरस्वती, लक्ष्मी के साथ महाकाली की भी पूजा की जाए। बाली ने युवा पीढ़ी को चेतावनी देते हुए कहा कि जब तक देश भूत, वर्तमान, भविष्य की पीढ़ी शक्ति की पूजा नहीं करेगी तब देश हारती हुई लडाई लड़ता रहेगा व गुलामी की जंजीर में जकड़ा रहेगा।

इस समारोह में प्रमुख वक्ता के रूप में बोलते हुए कैलाश शर्मा ने कहा कि भारत के गौरवमय इतिहास देखकर प्रसन्न हम होते हैं लेकिन वर्तमान परिदृश्य पर नजर डालें तो मन दुखी होता है। श्री शर्मा ने कहा कि एक समय था कि दुनिया के युवक हमारे देश में अध्ययन करने के लिए आते थे और आज हमारे देश का युवा विदेशों में विद्या अध्ययन के साथ–साथ बहुराष्ट्रीय कंपनियों के मायाजाल के चलते पलायन कर रहा है। ■

गुजरात का 38वां प्रदेश अधिवेशन सम्पन्न

संस्कारित छात्र शक्ति से ही होगा भारत उदय- पंकज पटेल

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के 38वें प्रदेश अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए प्रसिद्ध उद्योगपति और 'कैडिला जाडईस' के चेयरमैन श्री पंकज पटेल ने कहा कि राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत तथा भारतीय मूल्यों से संस्कारित छात्र ही आने वाले दिनों में भारत को विश्व में प्रतिष्ठित करेगी। उन्होंने विद्यार्थी परिषद् की सराहना करते हुये कहा छात्रों को रचनात्मक दृष्टि देकर उन्हें देश के विकास के कार्य में लगाने का काम परिषद् बखूबी कर रही है। उद्घाटन कार्यक्रम में विशेष अतिथि के नाते उपस्थित व्यापारी महामंडल के पूर्व चेयरमैन उत्कर्ष भाई शाह ने छात्रों को आह्वान करते हुये कहा कि अपनी पढ़ाई के साथ–साथ सामाजिक विषमताओं के विरूद्ध भी संघर्षशील रहें। इस अवसर पर परिषद के प्रदेश सहसंगठन मंत्री चेतस सुखड़िया ने परिषद् की गतिविधियों तथा उद्देश्यों के बारे में जानकारी दी।

17 से 19 नवंबर तक कर्णावती में हुए परिषद् के इस प्रांत अधिवेशन में 'शैक्षणिक परिस्थिति' तथा 'वर्तमान परिस्थिति' पर दो प्रस्ताव पारित किये गये। इस प्रस्तावों में राज्य में प्रवेश प्रक्रिया में होने वाली गड़बड़, सरकारी छात्रावासों की कमी, चुनावों में घट रहे छात्र प्रतिनिधित्व आदि विषयों पर गंभीर चिंता प्रकट की गई। अधिवेशन में परिषद् के राष्ट्रीय सह संगठनमंत्री श्री अतुल कोठारी ने 'संगठन–कार्य विस्तार एवं विकास', क्षेत्रीय संगठन मंत्री संजय पाचपौर ने "वर्तमान बदलेंगे भविष्य बनायेंगे" तथा प्रदेश अध्यक्ष प्रवेश त्रिवेदी ने "वर्तमान शैक्षणिक समस्याएं– कारण व हमारी भूमिका" विषयों पर आये हुए छात्रों का मार्गदर्शन किया।

अधिवेशन में आगामी सत्र के लिये नई प्रदेश कार्यकारी परिषद का गठन किया गया। प्रदेश अध्यक्ष के लिये निवर्तमान अध्यक्ष श्री प्रवेश चर्तुवेदी को ही दोबारा निर्वाचित किया गया। प्रदेश मंत्री के लिये कुणालशाह को निर्वाचित किया गया। अधिवेशन में 24 जिलों के 73 स्थानों से 264 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया जिसमें 26 छात्रायें शामिल थी। ■

अभाविप का 41वाँ महाराष्ट्र प्रदेश अधिवेशन औरंगाबाद में संपन्न

अभाविप महाराष्ट्र प्रांत का 41वाँ प्रदेश अधिवेशन दि. 8,9,10 दिसम्बर 2006 को संभाजीनगर, औरंगाबाद में उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। अधिवेशन परिसर को महाराष्ट्र में सामाजिक समरसता के कार्य करने वाले 'गुरूवर्य लहुजी साळवे नगर' तथा सभागार को 'कै. प्रल्हाद जी अभयंकर सभागार' ऐसे नाम दिया था। यह अधिवेशन "शिक्षा व सुरक्षा" इस विषय पर केंद्रित था। अधिवेशन की शुरूआत ध्वजारोहण और वंदेमातरम् से हुई।

अधिवेशन का उद्घाटन दि. 8 दिसम्बर 2006 को मानव विकास मिशन के श्री. कृष्णाजी भेगे ने दीप प्रज्जवलित करक किया। अधिवेशन के उद्घाटनकर्ता श्री कृष्णा भेगे ने "जीवन जीने के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण की आवश्यकता है तथा छात्रों ने कठोर परिश्रम एवम् सकारात्मक दृष्टिकोण का अवलंब किया तो निश्चित ही यश प्राप्त होगा' ऐसा प्रतिपादन अपने भाषण में किया।

इसी दिन 1857 स्वतंत्रता संग्राम में सहभागी 57 क्रांतिकारियों के जीवन कार्य पर आधारित बनी चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन स्वागत समिति के कार्याध्यक्ष श्री अरूण जी देशपांडे के द्वारा हुआ।

अधिवेशन में महाराष्ट्र की शैक्षिक सद्यस्थिती एवं महाराष्ट्र की सामाजिक सद्यस्थिती इन दो विषयों पर प्रताव पारित किए गए। शैक्षिक सद्यस्थिति इस प्रस्ताव में विश्वविद्यालय के कालबाह्य अभ्यासक्रम, व्यावसायिक अभ्यासगक्रमों की शुल्क निश्चित तथा प्रवेश प्रक्रिया में होनेवाला विलंब छात्रवृत्ती आदि विषय रखे गए। तथा सामाजिक सद्यस्थिती इस प्रस्ताव में खैरलांजी हत्याकांड, कानपुर में हुई डॉ0 बाबा साहब अंबेडकर पुतला विटंबन की घटना, किसानों की बढ़ती आत्महत्या, अंतर्गत सुरक्षा, प्रसार माध्यमों की भूमिका, शासन की उदासीनता इन विषयों पर तीव्र असंतोष व्यक्त किया गया।

अधिवेशन के अंतिम सत्र में सन 2006–07 इस शैक्षिक वर्ष के लिए प्रदेश पदाधिकारी परिषद की घेषणा की गयी। जिसमें प्रदेश अध्यक्षा प्रा. सुरेखा किनगांवकर नांदेड, प्रदेश मंत्री श्री परमेश्वर हासबे पूणे की घोषणा की गई।

इस अधिवेशन को महाराष्ट्र के 25 जिलों से 82 तहसीलों से 153 सीन से 187 महाविद्यालयों से कुल 576 विद्यार्थी प्रतिनिधि उपस्थित थे। ■

डॉ. रामनरेश सिंह विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा श्री सुरेश भट्ट राष्ट्रीय महामंत्री के रूप में निर्वाचित

देश के अग्रणी छात्र संगठन अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. रामनरेश सिंह तथा राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेश भट्ट वर्ष 2006–07 के लिये निर्वाचित हुए हैं। निर्वाचन अधिकारी प्रा. शेखर चंद्राते ने इस सन्दभ्र में अभाविप, केंद्र कार्यालय मुंबई से यह प्रेस विज्ञप्ति जारी की है। अभाविप केंद्र कार्यालय से चुनाव अधिकारी प्रा. शेखर चंद्रात्रे द्वारा जारी वक्तव्य के अनुसार दोनों पद का कार्यकाल 2006–07 एक वर्ष रहेगा और दोनों पदाधिकारी हैदराबाद, आंध्रप्रदेश में 25 दिसम्बर 2006 से प्रारंभ होने वाले 52 वें राष्ट्रीय अधिवेशन में अपना पदभार ग्रहण करंगे।

डॉ. रामनरेश सिंह, भूपेंद्र नारायण मण्डल विश्वविद्यालय सहरसा, बिहार में मैथिली स्नातकोक्तर विभाग के उपाचार्य हैं। तथा गत 17 वर्षों से अभाविप में सक्रिय हैं। डॉ. सिंह का राष्ट्रीय सुरक्षा विषय पर गहरा अध्ययन है। आपके आलेख आई. ए. के पाठ्य पुस्तकों में संकलित होते रहे है। देश–विदेश के कई संस्थानों के द्वारा आपको हिन्दी साहित्य भाषा में सेवा एवं सहयोग हेतु पुरस्कृत किया गया है। बिहार में विद्यार्थी परिषद का कार्य मजबूत करने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। डॉ. रामनरेश सिंह ने नगर अध्यक्ष, बिहार प्रांत उपाध्यक्ष, बिहार प्रांत अध्यक्ष ऐसे विभिन्न जिम्मेदारी का निर्वाह परिषद में किया है। आप 2003 से अभाविप के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष है। ■

श्री सुरेश भट्ट मूलतः उत्तरांचल के नैनीताल जिले के हैं। 1988 से अभाविप के सम्पर्क में हैं। एम. भूगोल, एल. एल. बी. तक की शिक्षा पूरी की है। महाविद्यालय के दिनों से अभाविप के सक्रिय कार्यकर्ता रहे। आप 1992 में कुमाउँ विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा के छात्रसंघ में भी रहे हैं। श्री भट्ट शिक्षा प्राप्ति के पश्चात् 1994 से अभाविप के पूर्णकालिक कार्यकर्ता बनकर कार्य कर रहे हैं। वर्तमान में आप पूर्वी उत्तर प्रदेश प्रांत के प्रांत संगठन मंत्री हैं। आपका केन्द्र वाराणसी है। आप अभाविप के राष्ट्रीय मंत्री भी रहे हैं। श्री सुरेश भट्ट श्रीराम जन्म भूमि आन्दोलन के दौरान गिरफ्तार होकर में तिहाड़ जेल गये तथा पृथक उत्तरांचल राज्य निर्माण आंदोलन में आपकी सक्रिय भूमिका रही। ■

सच्चर आयोग की रिपोर्ट देश तोड़ने की साजिश : के.एन. रघुनन्दन

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री श्री के.एन. रघुनन्दन परिषद् के पूर्णकालिक कार्यकर्ता हैं। उन्होंने परिषद् के कर्नाटक प्रांत संगठन मंत्री, राष्ट्रीय मंत्री, जैसे कई महत्वपूर्ण दायित्वों का निर्वहन किया है। देश की वर्तमान परिस्थिति पर उनसे छात्रशक्ति संवाददाता की हुई बातचीत के संपादित अंश...

प्रश्न– विद्यार्थी परिषद की वर्ष 2006 में कौन सी प्रमुख उपलब्धियां आप मानते हैं?

उत्तर– विद्यार्थी परिषद एक रचनात्मक दष्टिकोण लेकर छात्र समुदाय में कार्य कर रहा है इसलिये कई प्रकार की गतिविधियां परिषद में निरंतर चलती रहती हैं। इस वर्ष की विशेष उपलब्धियों की बात करें तो छात्र संघ चुनावों के लिये गठित लिंगदोह कमिटी रिपोर्ट उच्चतम न्यायालय को दी है उसमें बहुत सी अनुशंसायें वही हैं जो परिषद ने अपने ज्ञापन में उन्हें सौंपी थी। इसलिये छात्र संघ चुनावों में सुधार लाने के पिछले कई वर्षों के अपने प्रयास में हमें सफलता मिली है। इसके अतिरिक्त बांग्लादेशी घुसपैठ के विरूद्ध देश भर में अभियान चला कर परिषद ने फिर से इस गंभीर मुद्दे को देश के जनमानस में चर्चा का विषय बनाने में सफलता हासिल की है। इसके अतिरिक्त शिक्षा के व्यापारीकरण को रोकने के लिये भी देश भर में जबरदस्त आंदोलन इस वर्ष हुए हैं।

प्रश्न– भारत–अमरीका परमाणु संधि पर आपका क्या मत है?

उत्तर– विद्यार्थी परिषद का शुरू से ही मानना रहा है कि राष्ट्रीय हितों से समझौता कर किसी भी प्रकार की संधि पर भारत को हस्ताक्षर नहीं करना चाहिये। वर्तमान भारत–अमेरिका परमाणु संधि के बारे में भी रक्षा विशेषज्ञों और वैज्ञानिकों के मन में कई संदेह हैं। इसलिये विद्यार्थी परिषद का मत है कि सरकार को इस संधि को वर्तमान स्वरूप में स्वीकार नही करना चाहिएं यह हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा के साथ जुड़ा हुआ विषय है, इसलिये इस विषय पर किसी भी प्रकार के दबाव के आगे नही झुकना चाहिए।

प्रश्न– संप्रग सरकार द्वारा गठित सच्चर आयोग की रिपोर्ट के बारे में आपका क्या कहना है? क्या आपको लगता है कि इससे अल्पसंख्यकों का कुछ हित होगा?

उत्तर– देखिये, एक बात बड़ी स्पष्ट है कि इस आयोग के रिपोर्ट का उद्देश्य अल्पसंख्यकों का हित साधना नही है बल्कि अपने वोट बैंक को मजबूत करना है। वर्तमान केन्द्र सरकार जिस प्रकार से मुस्लिम तुष्टिकरण को बढ़ावा दे रही है, उससे न मुस्लिम समाज का हित होगा, न इस देश का हित होगा। इस रिपोर्ट को आधार बनाकर जिस प्रकार देश में मुस्लिमों को आरक्षण देने की तैयारी चल रही है, उससे देश की एकता और अखण्डता को गंभीर खतरा उत्पन्न हो गया है। परिषद् का मानना है कि यह रिपोर्ट देश तोड़ने की एक और साजिश है। इसलिये विद्यार्थी परिषद सरकार के इस राष्ट्रविरोधी निर्णय का पूरजोर से विरोध करती है।

प्रश्न– देश की वर्तमान परिस्थिती को देखते हुए आने वाले समय में विद्यार्थी परिषद की क्या प्राथमिकतायें रहने वाली है?

उत्तर– मुझे लगता है कि आने वाले दिनों में प्रमुख रूप से दो मुद्दे परिषद की प्राथमिकता में रहने वाले हैं। एक राष्ट्रीय सुरक्षा मुद्दा है। जिस प्रकार से संप्रग सरकार द्वारा अल्पसंख्यक वोट बैंक के लिये देश की सुरक्षा, एकता व अखण्डता के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है, उसके विरूद्ध देश भर में जन–जागरण करते हुये एक प्रखर जनमत खड़ा करना और दूसरा विषय रहने वाला है वैश्वीकरण की नीतियों के कारणों से बढ़ रहे शिक्षा के व्यापारीकरण व बेरोजगारी की वजह से देश का जो युवा वर्ग त्रस्त है, इन नीतियों के विरूद्ध देश भर के छात्र समुदाय को संघर्ष के लिये लामबंद करना ही परिषद की प्रथमिकता रहने वाली है। जिसके लिए योजनाऐ बन रही है। ■

Foreign Students Meet

Enjoy The Rich Heritage Of India: Bajnath

A get together of foreign students was organized at Hans Raj College, University of Delhi. The event was jointly organized by Antar Rashtriya Sahayog Parishas (ARSP) and World Organisation of Students and Youth(WOSY). 146 foreign students representing 25 countries participated in this function.

The Ambassador of Suriname Shri Krisendat Bajnath was the chief guest of the function that was presided over by the Principal of Hans Raj College Dr. S.R. Arora. The chief guest H.E. Krishnedat Bajnath drew the attention of the students to the glorious history of India and its contribution in various fields. He particularly mention Chanakya's Arth Shastra'(Economics) and 'Chanakya Neeti' (the science and art of Diplomacy). He advised the students to work hard and at the same time enjoy the rich heritage of India by visting historical and cultural places in India.

The Program started wth lighting of lamp. Welcoming the foreign students, Shri Bharat Bhusan, Convener, Foreign Students Cell ARSP and Reader, Hans Raj College introduced the guests. The student's representatives presented flower bouquests to the guests. Shri Ramesh Pappa, Secy. Gen. WOSY greeted the students and apprised them about the various activities of WOSY. Shri Ashok Malhothra, Secy. ARSP charted out the illustrious history and philosophy of ARSP. He gave an account of various foreign students in India in the past and are now Ministers and senior diplomats. ARSP has been in contact with them since their college days.

Shri Sudhansu Mittal, former DUSU President, welcomed the students and shared his experience as a student leader with them. Dr. S.R. Arora Principal Hans Raj College, greeted the students and assured them all the help during their stay in India.

This was followed by a verycolourful cultural programme; which included Sega dance by girls from Sri Lanka, singing of Vande Matram and Punjabi and Hindi songs and Rock Music. Bhangra dance by the students of Guru Nanak Dev Khalsa College was enjoyed by the large gathering.Awards and trophies were presented to the students.vote of thanks was presented by gopal Arora, which was followed by High Tea .■

Protest Rally of the ABVP Against Bomb explosion

21st Nov.(2006) : The coochbehar town unit of the ABVP West Bengal observed a protest rally aginst the bomb explosion in Darjeeling Mail at Belacoba station. The Terroists of the ISI are directly involved in this hateful activity, says the state organizing secretary of the ABVP Sri Amitava chakraborty. he furder said that the West Bengal Govt has been totally failed to control the terrorist activities. The effigy of West Bengal chief Minister Sri Buddhadev Bhatacharjee was burnt on this occasion. Later on, the Parishad activist blocked the road for an hour demanding the hanging of the Afzal Guru. Prominents activists including state member and unit Secretary Coochbehar town stn. Nanda Sarkar and Organising Secretry of Coochbehar town unit Smt. Rita Paul were present in this demonstration.. ■

सिंगुर में उतरा वामपंथियों का जनवादी नकाब

बेबस किसानों पर बरपा पुलिस का कहर – महिलाओं तक को नहीं छोड़ा

– मोहित भारद्वाज

वैसे तो वामपंथी हमेशा से ही अपने दोहरे चरित्र के लिये विश्व भर में कुख्यात है। परन्तु जिस तरह से सिंगुर में उनके चेहरे से जनवादी होने का नकाब उतरा है उससे खुद उनके चहेते बुद्धिजीवियों और सामाजिक संगठनों के नाम पर दुकानदारी करनें वालों के भी होश उड़ गए हैं। 'टाटा बिड़ला की सरकार–मुर्दाबाद, किसान–मजदूर एकता जिंदाबाद' के नारे लगा कर पिछले कई दशकों से इन वर्गों को भरमाने वाले वामपंथियों के किसान व मजदूर संगठनों को तो जैसे सांप ही सूंघ गया है। सिंगुर में जिस तरह वाम सरकार पुलिस कि द्वारा कृषकों की जमीन अधिग्रहण करना चाह रही है, वह काफी शर्मनाक है। टाटा का कारखाना लगाने के लिये सिंगुर की 1000 एकड़ उपजाउ जमीन को किसानों की इच्छा के विरूद्ध टाटा को देने से किसानों ने आंदोलन शुरू कर दिया है। आंदोलन को दबाने के लिये जिस प्रकार से पुलिस का प्रयोग किया गया उसने 1977 के आपात्काल की याद ताजा करवा दी। निहत्थे बेकसूर किसानों पर 2 दिसम्बर को 5000 पुलिसकर्मियों ने अंधाधुंध लाठियां बरसाई, आंसू गैस

छोड़ी तथा रबर की गोलियां दागी गई। पुलिस ने आतंक का ऐसा तांडव मचाया कि लोग सिहर उठे। शायद ही कोई घर था जिसमें पुलिस नहीं घुसी थी। जो भी मिला उसे घसीट कर घरो से बाहर निकाला गया और बुरी तरह पिटाई की गई, यहां तक कि महिलाओं को भी नहीं बख्शा गया।

पुलिस और ताकत के बल पर अपने विरोधियों को चुप करवाने के वामपंथियों के बर्बरतापूर्ण इतिहास में एक और अध्याय जुड़ गया है। केन्द्र सरकार द्वारा वैश्वीकरण की नीतियों को आगे बढ़ाने पर मगरमच्छ के आंसू बहाने वाले इन वामपंथियों द्वारा बंगाल में इस प्रकार से एक औद्योगिक घराने के आगे घुटने टेकते हुए किसानों पर अत्याचार करने से इनका असली चेहरा उजागर हो गया है। जिस प्रकार से ममता बनर्जी के नेतृत्व में वहां के किसानों ने वामपंथियों के विरूद्ध संघर्ष शुरू किया है, उससे लगता है कि आने वाले दिनों में पूरे बंगाल में इस दमनकारी शासन के खिलाफ संघर्ष तेज होगा। शायद इन के पाप का घड़ा अब भर चुका है और सिंगुर के इस घटनाक्रम के बाद इस घडे का फूटना लाजिमी जान पड़ता है। ■

Social service with commitment stressed

RAICHUR: Youths should concentrate on social service with commitment, and that is possible only with an understanding of spirituality, said Smitha of Ishwariya Vishwa Vidyalaya. She was delivering a lecture at the Government Junior College organised by the local unit of the ABVP, to celebrate Sthree Shakti Day as part of Sister Nivedita and Jhansi Rani Laxmibai's birth anniversary on Monday.

State joint secretary of the ABVP Bandesh Valkamdinni said that the future of the country depended on the youth. ABVP district chief Kunteppa Gouripur exhorted the youth to imbibe the values of the patriots.

The ABVP made rapid strides since independence of country. Instead of facing the ABVP ideologically in a democratic way, the marxist, Naxal and Islamic goondas had exhibited monumental intolerance and resorted to murder politics. The nation splitters have put medieval barbarism to shame, betraying their Utter contempt for nationalism. Despite the terror, ABVP *Karyakartas* continue to move forward. It is a great saga of sacrifice and martyrdom:-

Madhusudan Goud

27- 10- 1984
KARIMNAGAR

Metapalli

Madhusudan Goud, a student of B. Com. took an active role in ABVP in Metapalli and Armoor colleges. The PWG thought that it could wipe out ABVP in this area by eliminating Madhusudan Goud.

Gandhi Hanuman mandir at kammarapalli, near Metapalli, is a famous shrine. Everyday devotes thron in large numbers. On 27 October 1984, Madhusudan Goud too went to the mandir. Little realizing that he was being shadowed by radicals. It was morning and there were many devotees. While Madhusudan was performing pradakhshina, six PWZ men encirciled and fired at him. They threw bombs on the devoters to scare them away. Madhusudan ran a little distance but stumbled on the sandy ground. The assailants pumped more bullets into his body. Exhibiting medieval barbarism they severed his head.

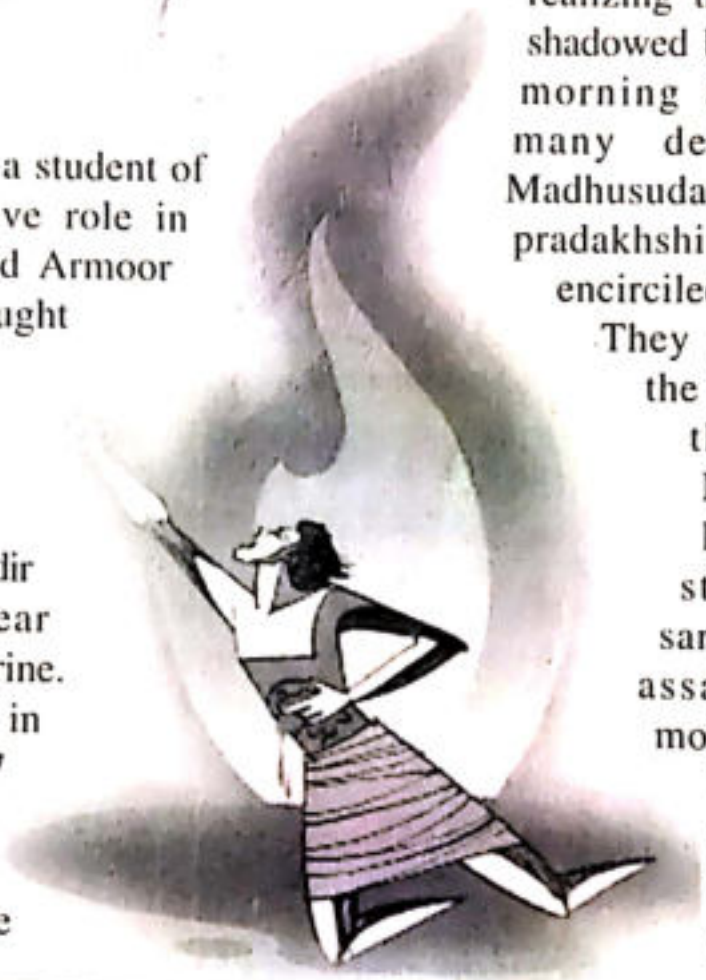

Madhusudan was from gouda i.e., toddy tapers' caste (BC). This was one more instance of Naxal's attack on the downtrodden.

Karimnagar district observed a bandh on 29 october condemning the assassination.

विश्व विद्यार्थी युवा संघ (WOSY) की ओर से दिल्ली में पढ़ने वाले विदेशी छात्रों के स्वागत कार्यक्रम में मंच पर उपस्थित सूरीनाम के राजदूत श्री कृष्णदत्त बैजनाथ तथा अन्य अतिथिगण

विश्व विद्यार्थी युवा संघ (WOSY) की ओर से दिल्ली में पढ़ने वाले विदेशी छात्रों के स्वागत कार्यक्रम के समापन पर वंदे मातरम् के दौरान उपस्थित छात्र

अभाविप मध्य भारत प्रांत की ओर से आयोजित सामाजिक समरसता यात्रा के शुभारंभ समारोह में उपस्थित श्री कमल पटेल (राजस्व मंत्री, म.प्र.) तथा श्री पी. सूर्यनारायण (रा.का.प. सदस्य अ.भा.वि.प.)

अभाविप मध्य भारत प्रांत की ओर से आयोजित सामाजिक समरसता यात्रा में श्री गुरुजी और चन्द्रशेखर आजाद के चित्रों से सजा यात्रा का वाहन

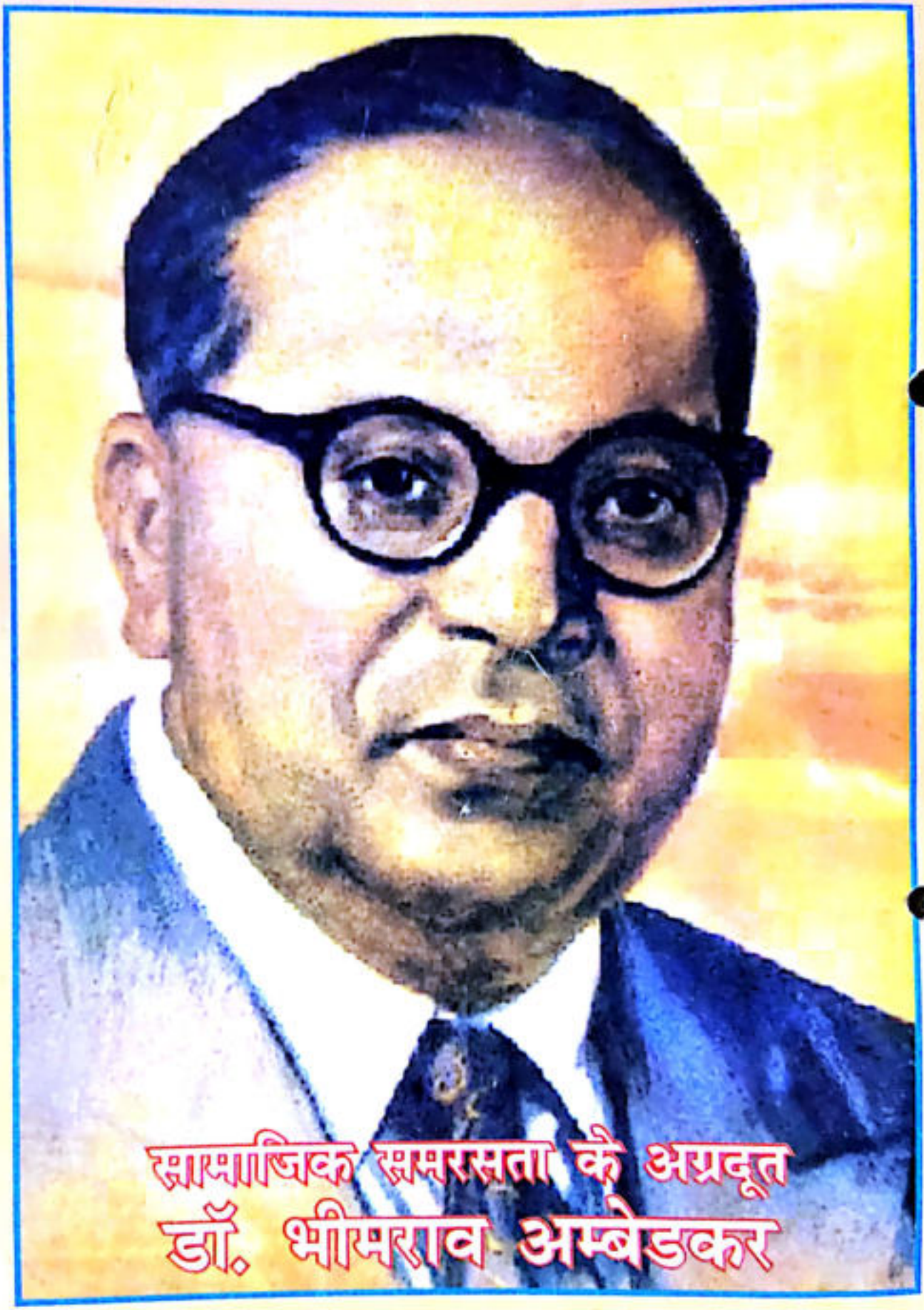
सामाजिक समरसता के अग्रदूत
डॉ. भीमराव अम्बेडकर